जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

अंक-24

सितंबर-2025

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

मेक इन इंडिया

राष्ट्र के लिए युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता

दिनांक 01.07.2025 को भारतीय नौसेना को पी17 क्लास के दूसरे स्टील्थ फ्रिगेड उदयगिरी की सुपुर्दगी बैठक में उपस्थित अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, निदेशकगण, अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण एवं नौसेना अधिकारीगण।

दिनांक 26 सितंबर 2025 को माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की 92वीं वार्षिक आम बैठक आयोजित की गई, बैठक में उपस्थित वरिष्ठगण ।

जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

संरक्षक

कैप्टन जगमोहन, भानौ (नि), अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मुख्य परामर्शदाता

श्री अरुण कुमार चान्द, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)

संपादक

श्री श्रीनिवास सिन्हा, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)
श्रीमती शुभ्रा सिन्हा, प्रबंधक (राजभाषा)
सुश्री जयंतिका मुखर्जी, राजभाषा अधिकारी
श्री संदीप दुबे, हिंदी अनुवादक

प्रकाशक

राजभाषा अनुभाग
माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड,
डॉकयार्ड रोड, मुंबई - 400010
फोन: 22-23710456

पत्रिका डिज़ाइन एवं मुद्रित: :

फोकस कम्युनिकेशन्स
104 सज्जद यसिन चेम्बर्स, 30-एफ, बोमंजी लेन,
फोर्ट, मुंबई- 400001
ईमेल: info@focuscommunications.co.in

विषय - सूची

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...	05
निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश...	06
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश...	07
संपादकीय...	08
भारतीय रक्षा क्षेत्र- श्री राजेश हिंदुराव आंबवाड, प्रबंधक (पूर्व खंड-वाणिज्य)	09-13
शहीद भगत सिंह- सुश्री मधुरा मयूर पायरे, प्रशिक्षु (एटीएस)	14
प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला (एटीएस)- श्री अरुणेश मुदगल, प्रबंधक (प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला)	15-19
सर जे जे ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स- श्री रोहित पांडया, प्रबंधक (सीएसआर)	20
सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि- श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ला, प्रबंधक (संरक्षा- अनिक चेंबूर यार्ड)	21-23
एक मतदान एवं सम्मिलित कार्रवाई (टीम वर्क) का महत्व)- श्री नीलेश एस पंडित, प्रबंधक (पूर्व खंड-योजना)	24
द अल्टीमेट ह्यूमन रेस- कॉमरेड्स मैराथन 2025-श्री सुरेश वेलंकर, यूटिलिटि हैंड (जनि-अनुरक्षण)	25-26
राजभाषा प्रशिक्षण की चार सीढ़ियाँ- प्रबोध से पारंगत तक- श्री संदीप दुबे, हिंदी अनुवादक (राजभाषा)	27-30
जीवन कितना बदल गया है- श्री आसिफ़ इकबाल कुरेशी, महाप्रबंधक (बाह्यस्त्रोत)	31
हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के संदर्भ में 'वाक् से पाठ' तंत्र श्री रितु राज सिंह, उप प्रबंधक (तकनीकी सेवाएं)	32-35
कर्म का सिद्धांत- श्री घनश्याम प्रजापती, प्रबंधक (पूर्व खंड-योजना)	36
कहानी: भविष्य का कारखाना- श्री सुनील कुशवाहा, मुख्य प्रबंधक (सामग्री क्रय)	37-38
ग्लोबल युग में हिंदी की स्थिति एवं भूमिका-श्री रामकृष्ण दायमा, वरिष्ठ अभियंता (तकनीकी सेवाएं)	39-40
मेरी छोटी सी जलपरी- श्री विनायक तोरस्कर, इलेक्ट्रॉनिक मेकेनिक (पूर्व खंड-विद्युत एवं आयुध)	41-42
योग- एक जीवन संजीवनी- श्री लाल साहब सिंह, मुख्य प्रबंधक (पाईप शॉप)	43-44
महाकुंभ- श्रीमाती मौसमी मंडल, पत्नी श्री तपन मंडल, प्रबंधक, सचिव (यूनिट-3, एमडीआरसी)	45-47
मुंबई की 'कूल-कूल' सर्दी: सेहत का तड़का और देसी नुस्खे!- श्री गौतम राजपूत, वरिष्ठ अभियंता (तकनीकी सेवाएं)	48-49
हास्य व्यंग्य - श्रीमती मोना अग्रवाल पत्नी- प्रवीण अग्रवाल	50
समायोज्य टैप रिंच- श्री हर्ष कुमार, प्रशिक्षु (एटीएस)	51
साहित्य दर्शन सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'- आधुनिक हिंदी काव्य के नवजागरण पुरुष	52-53
कॉर्पोरेट समाचार	54-57
माझगांव डॉक के कार्यक्रमों की झलकियाँ	58-59
एमडीसी द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम	60-61
हिंदी पखवाड़ा 2025 की झलकियाँ	63-6

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, एमडीएल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...

प्रिय एमडीएल परिवार,

'जलतरंग' के 24वें अंक के माध्यम से आप सभी से पहली बार संवाद स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। एमडीएल का कार्यभार संभालना मेरे लिए गर्व का विषय है। आज एमडीएल सफलता के नए आयामों को छू रहा है। हमने हाल ही में भारतीय नौसेना की ताकत में अभूतपूर्व वृद्धि की है। 15 जनवरी 2025 का दिन भारतीय इतिहास में दर्ज हो गया, जब हमने एक साथ तीन फ्रंटलाइन युद्धपोतों/ पनडुब्बियों का 'ट्राई-कमीशनिंग' देखा। इसके अलावा, जुलाई 2025 में हमने प्रोजेक्ट 17ए के दूसरे जहाज 'आईएनएस उदयगिरी' को भी राष्ट्र को समर्पित किया। इतने कम समय में इतनी बड़ी डिलीवरी देना हमारे इंजीनियरों और कामगारों की 'जहाज निर्माण' क्षमता को दर्शाता है।

भविष्य की ओर देखते हुए, हम प्रोजेक्ट 75(I) के तहत अगली पीढ़ी की पनडुब्बियों के निर्माण और लैंडिंग प्लेटफॉर्म डॉक्स जैसे बड़े प्रोजेक्ट्स के लिए पूरी तरह तैयार हैं और हम अत्याधुनिक 'ग्रीन शिपिंग' के जरिए भविष्य की ओर और मजबूती से बढ़ रहे हैं।

लेकिन, एक संगठन केवल मशीनों से नहीं, बल्कि अपनी संस्कृति और भाषा से भी पहचाना जाता है। हमारा राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य कर रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा नियमित रूप से आयोजित की जाने वाली हिंदी कार्यशालाएं, तकनीकी संगोष्ठियां और 'हिंदी पखवाड़ा' जैसे आयोजन कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति रुचि जगाने में सफल रहे हैं। विशेष रूप से नराकास के माध्यम से अन्य उपक्रमों के साथ समन्वय और गृह मंत्रालय के दिशा-निर्देशों का शत-प्रतिशत अनुपालन करना, यह दर्शाता है कि हम अपने संवैधानिक दायित्वों के प्रति कितने सजग हैं। 'जलतरंग' का निरंतर प्रकाशन और इसमें तकनीकी लेखों का समावेश इस बात का सबूत है कि हम विज्ञान और रक्षा जैसे विषयों को भी हिंदी भाषा में सहजता से अपना रहे हैं।

मैं राजभाषा विभाग और संपादकीय टीम को इस उत्कृष्ट पत्रिका के लिए बधाई देता हूँ और आशा है कि भविष्य में भी हम उत्पादन के साथ-साथ अपनी राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी अग्रणी रहेंगे।

शुभकामनाएं!

जगमोहन

कैप्टन जगमोहन
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश

प्रिय साथियो,

हमारी गृह पत्रिका "जलतरंग" के 24वें अंक का विमोचन हमारे संस्थान की सृजनात्मक यात्रा का एक और महत्वपूर्ण पड़ाव है। यह पत्रिका मात्र कागज़ के पन्नों का संग्रह नहीं, बल्कि एमडीएल परिवार के सदस्यों की भावनाओं, विचारों और कल्पनाओं का जीवंत दस्तावेज है।

भाषा किसी भी संस्कृति की आत्मा होती है और हिंदी हमारी साझा विरासत है। 'जलतरंग' के माध्यम से हम न केवल अपनी भाषा को समृद्ध कर रहे हैं, बल्कि अपने आपसी भाईचारे और सौहार्द को भी मजबूत कर रहे हैं। जब हम अपनी भाषा में अभिव्यक्त होते हैं, तो वह संवाद सबसे अधिक प्रभावी और आत्मीय होता है। यह देखकर संतोष होता है कि हमारे अधिकारी और कर्मचारी अपने दैनंदिन सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग कर रहे हैं। संस्थान की यह पत्रिका आपके विचारों, अनुभवों और सृजनात्मकता को एक मंच प्रदान करने का सराहनीय प्रयास है, साथ ही यह हम सभी के लिए गर्व का विषय है कि हमारी पत्रिका के 23वें अंक को नराकास द्वारा द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

मेरा आप सभी से अनुरोध है कि आप राजभाषा को केवल नियमों के पालन तक सीमित न रखें, बल्कि इसे अपनी कार्य संस्कृति का सहज हिस्सा बनाएं।

इस अंक को मूर्त रूप देने के लिए मैं संपादकीय टीम के प्रयासों की सराहना करता हूँ और सभी पाठकों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'जलतरंग' का यह अंक भी पिछले अंकों की भांति ज्ञानवर्धक और पठनीय होगा।

हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

वासुदेव

कमांडर वासुदेव पुराणिक, भानौ(नि)
निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक)

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश

प्रिय साथियो,

राजभाषा पत्रिका जलतरंग का 24वां अंक प्रकाशित करते हुए हमें हर्ष हो रहा है, पत्रिका प्रकाशित करने का हमारा मुख्य लक्ष्य माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में हिंदी को अधिक से अधिक बढ़ावा देना है। पत्रिका में एमडीएल के कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिखे गए लेखों एवं कविताओं को प्रकाशित किया जाता है, जिससे कि कार्यालय में हिंदी लिखने एवं पढ़ने का प्रचलन बढ़े।

एमडीएल में जलतरंग का प्रकाशन वर्ष 2014 से हो रहा है, तब से अभी तक पत्रिका को मुबंई नराकास के वार्षिक समारोह में प्रत्येक वर्ष पुरस्कार प्राप्त हो रहा है तथा इसके साथ हिंदी के विकास से जुड़े अन्य अनेक संस्थानों से भी लगातार पुरस्कार प्राप्त हो रहे हैं। जलतरंग राजभाषा पत्रिका को वर्ष 2015 में महामहिम राष्ट्रपति द्वारा प्रथम कीर्ति पुरस्कार तथा वर्ष 2016 में द्वितीय कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, रक्षा उत्पादन विभाग, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की एक इकाई है, जो भारतीय नौसेना के लिए युद्धपोत एवं पनडुब्बी का निर्माण करती है। राष्ट्र की सुरक्षा एवं समुद्री खतरों से सीमा को सुरक्षित रखने के लिए कंपनी लगभग 251 वर्षों से सेवारत है। एमडीएल का कार्य तकनीकी होने के बावजूद भी एमडीएल में हिंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग किया जाता है, तथा भारत सरकार के राजभाषा विभाग के आदेशों का अनुपालन किया जाता है।

मैं एमडीएल के उन अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विशेष धन्यवाद देता हूँ जिनकी रचनाएं इस पत्रिका में प्रकाशित की गई हैं। मैं इस संदेश के माध्यम से सभी एमडीएल सदस्यों से पत्रिका में और सक्रिय सहयोग करने की अपील करता हूँ।

मैं पत्रिका की सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

अरुण कु चान्द

श्री अरुण कुमार चान्द
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)

संपादकीय

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड रक्षा मंत्रालय के अधीन कार्यरत देश का प्रमुख सार्वजनिक उपक्रम है, जिसने साधारण डॉक से आरंभ होकर आज भारतीय नौसेना को सामरिक शक्ति प्रदान करने में महत्वपूर्ण पहचान स्थापित की है। विकास की इस निरंतर यात्रा में एमडीएल ने तकनीक, गुणवत्ता और आत्मनिर्भरता के नए मानक स्थापित किए हैं।

हमारी राजभाषा गृहपत्रिका 'जलतरंग' कंपनी की उपलब्धियों, परियोजनाओं और गतिविधियों का सहज, सरल और सारगर्भित प्रतिबिंब है। इसी उद्देश्य से तैयार किए गए जलतरंग के 24वें अंक में पाठकों की रुचि के अनुरूप तकनीकी और रचनात्मक दोनों प्रकार की सामग्री का संतुलित समावेश किया गया है। भाषा को सरल, स्पष्ट और उपयोगी बनाए रखना हमारा निरंतर प्रयास है।

एमडीएल सदैव राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित मानकों का पालन करते हुए हिंदी के प्रोत्साहन और प्रसार के लिए प्रतिबद्ध रहा है। इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए "हिंदी पखवाड़ा" उत्साहपूर्वक आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न स्पर्धाएं संपन्न हुईं। कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता ने इस आयोजन को विशेष सफलता दिलाई। हम सभी प्रतिभागियों और सहयोगियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

आशा है कि 'जलतरंग' का यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, उपयोगी और प्रेरक सिद्ध होगा।

सभी पाठकों, कर्मचारियों और सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्रीनिवास सिन्हा

श्री श्रीनिवास सिन्हा
महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)

भारतीय रक्षा क्षेत्र

श्री राजेश हिंदुराव आंबवाड
प्रबंधक (पूर्व खंड-वाणिज्य)

भारत में रक्षा क्षेत्र एक राष्ट्र की संप्रभुता की रक्षा करने और अपने नागरिकों की रक्षा करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत एक समृद्ध और जटिल इतिहास वाला देश है, रक्षा क्षेत्र देश के हितों के एक दुर्जेय संरक्षक के रूप में खड़ा है। इन वर्षों में, यह भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा तंत्र के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में विकसित हुआ है। यह लेख भारत में रक्षा क्षेत्र के जटिल कामकाज पर प्रकाश डालता है, इसके महत्व, चुनौतियों और हाल के वर्षों में इसकी प्रगति पर प्रकाश डालता है। भारत में रक्षा क्षेत्र केवल सशस्त्र बलों का संग्रह नहीं है; यह एक बहुआयामी पारिस्थितिकी तंत्र है जिसमें देश की रक्षा के लिए समर्पित विभिन्न शाखाएं और संस्थान शामिल हैं। इसके मूल में भारतीय थल सेना, भारतीय नौसेना और भारतीय वायु सेना हैं, जिनमें से प्रत्येक क्रमशः राष्ट्र के विभिन्न पहलुओं-भूमि, समुद्री सीमाओं और हवाई क्षेत्र की रक्षा के लिए जिम्मेदार हैं। इन प्राथमिक सशस्त्र बलों के अलावा, भारत में सीमा सुरक्षा बल (BSF), केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (CRPF), और भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP) जैसे अर्धसैनिक बल हैं जो कानून और व्यवस्था, आतंकवाद को रोकने और सीमा सुरक्षा को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत में रक्षा क्षेत्र के घटक भारत में रक्षा क्षेत्र देश के राष्ट्रीय सुरक्षा तंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें घटकों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल हैं। जिसमे शामिल घटकों का विवरण निम्न प्रकार है:

1. **भारतीय सशस्त्र बल-** सेना, नौसेना और वायु सेना क्षेत्रीय अखंडता और राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा करती है।
2. **भारतीय तटरक्षक-** समुद्री तटों की रक्षा करता है और समुद्री कानून लागू करता है।
3. **अर्धसैनिक बल-** सीआरपीएफ, बीएसएफ, आईटीबीपी, एसएसबी, आदि, सीमा सुरक्षा और आंतरिक सुरक्षा में सहायता करते हैं।

4. **डीआरडीओ (रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन)-** रक्षा प्रौद्योगिकियों में अनुसंधान और विकास आयोजित करता है।

5. **आयुध कारखाने और डीपीएसयू-** सैन्य उपकरण और रक्षा प्रणालियों का उत्पादन करते हैं।

6. **भारतीय नौसेना और तटरक्षक जहाज निर्माण उद्योग-** नौसेना के जहाजों का निर्माण करता है।

7. **भारतीय वायु सेना उपकरण विनिर्माण** - विमान उत्पादन के लिए घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी।

8. **सामरिक बल** - परमाणु निरोध के लिए भूमि-आधारित, समुद्र-आधारित और वायु-आधारित रणनीतिक बल।

9. **साइबर सुरक्षा और सूचना युद्ध** - महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे और सैन्य प्रणालियों की सुरक्षा करता है।

10. **अनुसंधान और विकास संस्थान-** सैन्य अनुसंधान और प्रशिक्षण का संचालन करना।

11. **सैन्य खुफिया एजेंसियां-** राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खुफिया जानकारी इकट्ठा करना, विश्लेषण करना और प्रसारित करना।

12. **रक्षा खरीद और नीति–** रक्षा खरीद नीतियां निर्धारित करता है और रक्षा बजट का प्रबंधन करता है।

13. **सामरिक कमान संरचना-** परमाणु, अंतरिक्ष और साइबर युद्ध क्षमताओं की देखरेख करता है।

14. **नागरिक सुरक्षा-** आपात स्थिति के दौरान नागरिकों को सुरक्षा और सहायता प्रदान करता है।

15. **राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद-** राष्ट्रीय सुरक्षा नीतियों को तैयार करती है और उनकी देखरेख करती है।

16. **सीमा सुरक्षा और अर्धसैनिक इकाइयाँ-** भारत की भूमि और समुद्री सीमाओं की रक्षा करती हैं।

भारत में रक्षा क्षेत्र का विकास भारत के रक्षा क्षेत्र का इतिहास परिवर्तन और अनुकूलन की कहानी है, जो प्रमुख घटनाओं और रणनीतिक बदलावों द्वारा चिह्नित है जिन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए राष्ट्र के दृष्टिकोण को आकार दिया है।

1962 भारत-चीन संघर्ष 1962 के भारत-चीन संघर्ष ने भारत के लिए एक स्पष्ट चेतावनी के रूप में कार्य किया। इसने युद्ध के लिए देश की तैयारी को उजागर किया और अपनी रक्षा क्षमताओं को बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इस चेतावनी के प्रत्युत्तर में भारत ने अपनी सैन्य क्षमताओं को सुदृढ़ करने के लिए अपने सकल घरेलू उत्पाद का 23% आबंटित करते हुए अपने रक्षा व्यय में उल्लेखित रूप से वृद्धि की है।

1965 भारत-पाक युद्ध 1965 के भारत-पाक युद्ध ने भारत के रक्षा क्षेत्र में एक नया आयाम लाया। इस अवधि के दौरान, संयुक्त राज्य अमेरिका ने युद्धरत राष्ट्रों को हथियारों के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया। इस प्रतिबंध ने न केवल युद्ध की गतिशीलता को प्रभावित किया बल्कि भारत को अपने रक्षा संबंधों में विविधता लाने के लिए भी प्रेरित किया। इस

बाहरी चुनौती के प्रत्युत्तर में भारत ने सोवियत संघ के साथ अपने रक्षा संबंधों को प्रगाढ़ किया, एक ऐसी साझीदारी जो आने वाले वर्षों में महत्वपूर्ण हो जाएगी। सोवियत निर्भरता से स्वदेशी नवाचार तक समय के साथ, रक्षा उपकरणों के लिए सोवियत संघ पर भारत की अत्यधिक निर्भरता ने दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता पैदा कर दी। राष्ट्र धीरे-धीरे लाइसेंस-आधारित उत्पादन से स्वदेशी डिजाइन-आधारित उत्पादन पर जोर देने के लिए परिवर्तित हो गया। यह बदलाव रक्षा विनिर्माण में आत्मनिर्भरता के लिए भारत की खोज में एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

1980 का दशक: अनुसंधान और विकास में एक जोर 1980 के दशक के मध्य में, भारत सरकार ने स्वदेशी रक्षा क्षमताओं को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान और विकास में पर्याप्त निवेश की आवश्यकता को पहचाना। उच्च प्रोफ़ाइल रक्षा परियोजनाओं को शुरू करने में रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) का समर्थन करने के लिए संसाधनों का उपयोग किया गया था। इन पहलों ने विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता को कम करने के लिए भारत के दृढ़ संकल्प को चिह्नित किया।

1983 का दशक: एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (आईजीएमडीपी) भारत के रक्षा स्वदेशीकरण में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर 1983 में एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (आईजीएमडीपी) की शुरुआत के साथ हासिल किया गया था। इस दूरदर्शी कार्यक्रम का उद्देश्य पांच मिसाइल सिस्टम विकसित करना है:

पृथ्वी (सतह से सतह), आकाश (सतह से हवा), त्रिशूल (पृथ्वी का नौसेना संस्करण), नाग (एंटी-टैंक), अग्नि (विभिन्न रेंज वाली बैलिस्टिक मिसाइलें: अग्नि I, II, III, IV, V) इन मिसाइल प्रणालियों ने न केवल भारत की रक्षा क्षमताओं को बढ़ाया बल्कि आगे स्वदेशी विकास की नींव भी रखी।

1990 आत्मनिर्भरता समीक्षा समिति (एसआरआरवी) 1990 में डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के मार्गदर्शन में आत्मनिर्भरता समीक्षा समिति ने 10 साल की आत्मनिर्भरता योजना तैयार की। इस योजना ने एक आत्मनिर्भरता सूचकांक (एसआरआई) की अवधारणा का प्रस्ताव रखा, जिसे कुल खरीद व्यय में स्वदेशी सामग्री के प्रतिशत हिस्से के रूप में

परिभाषित किया गया है। महत्वाकांक्षी लक्ष्य एसआरआई को 1992-1993 में 30% से बढ़ाकर 2005 तक 70% करना था। हालाँकि, यह लक्ष्य आज तक अप्राप्य है।

सह-विकास और सह-उत्पादन: एक नया फोकस स्वदेशीकरण में सराहनीय प्रयासों के बावजूद, यह स्पष्ट हो गया कि वे सशस्त्र बलों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपर्याप्त थे। इस अहसास ने विदेशी कंपनियों के सहयोग से सह-विकास और सह-उत्पादन की ओर एक रणनीतिक बदलाव किया। 1998 में, भारत और रूस ने संयुक्त रूप से ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों का उत्पादन करने के लिए एक अंतर-सरकारी समझौते में प्रवेश किया, जो रक्षा सहयोग में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था। रक्षा नवाचार के लिए वैश्विक भागीदारी भारत ने विभिन्न रक्षा परियोजनाओं के लिए इज़राइल और फ्रांस जैसे अन्य देशों के साथ साझेदारी भी स्थापित की है, जो अपनी रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने के लिए वैश्विक विशेषज्ञता और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने की अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। भारत के रक्षा क्षेत्र का इतिहास बाहरी स्रोतों पर निर्भरता से लेकर स्वदेशी नवाचार और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर बढ़ते जोर तक राष्ट्र की यात्रा का एक वसीयतनामा है। जैसा कि भारत अपनी रक्षा रणनीति विकसित करना जारी रखता है, यह क्षेत्र देश के सुरक्षा परिदृश्य को आकार देने और वैश्विक शांति और स्थिरता में इसके योगदान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण, एक महत्वपूर्ण रणनीति, अपनी सीमाओं के भीतर रक्षा उपकरणों के डिजाइन, विकास और उत्पादन के

लिए एक राष्ट्र की क्षमता को दर्शाती है, आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है और आयात पर निर्भरता को कम करती है। भारत में, एक विशाल क्षमता और रणनीतिक स्थिति वाले राष्ट्र में, स्वदेशीकरण कई सम्मोहक कारणों से सर्वोपरि महत्व रखता है। आत्मरक्षा कभी-कभी तनावपूर्ण संबंधों के साथ चीन और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों की उपस्थिति, आत्मरक्षा और तैयारियों को मजबूत करने की आवश्यकता को रेखांकित करती है। स्वदेशीकरण भारत को अपनी सुरक्षा बढ़ाने का अधिकार देता है, बाहरी व्यवधानों की भेद्यता को कम करता है।

तकनीकी उन्नति रक्षा प्रौद्योगिकी में प्रगति विभिन्न उद्योगों में तरंगित होती है, जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। एक मजबूत रक्षा प्रौद्योगिकी क्षेत्र नवाचार को बढ़ावा देता है, जिससे व्यापक अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नतीजतन, स्वदेशीकरण भारत की तकनीकी प्रगति के लिए उत्प्रेरक है। आर्थिक दक्षता भारत अपने सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 3% रक्षा के लिए आवंटित करता है, जिसका एक बड़ा हिस्सा आयात की ओर जाता है। स्वदेशीकरण इस आर्थिक पलायन को कम करता है, घरेलू उद्योगों को संसाधनों को निर्देशित करता है और बाहरी वित्तीय बहिर्वाह को कम करता है। रोजगार के अवसर स्वदेशीकरण की खोज के लिए असंख्य सहायक उद्योगों के साथ सहयोग की आवश्यकता होती है, जिससे रोजगार के अवसरों की अधिकता पैदा होती है। रक्षा विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र कई लोगों के लिए आजीविका का स्रोत बन जाता है, जो देश के आर्थिक ताने-बाने को और मजबूत करता है। स्वदेशीकरण क्यों मायने रखता है? सऊदी अरब के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आयातक भारत एक बड़ी चुनौती का सामना कर रहा है – रक्षा क्षेत्र में उच्च आयात निर्भरता के कारण पर्याप्त राजकोषीय घाटा। दुनिया के पांचवें सबसे बड़े रक्षा बजट के बावजूद, भारत अपनी हथियार प्रणालियों का 60% अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से प्राप्त करता है। यह भारत के लिए न केवल अपने राजकोषीय संकटों को संबोधित करने का समय है, बल्कि अपनी सुरक्षा, संप्रभुता और आर्थिक हितों पर भी जोर देने का है। सुरक्षा अनिवार्य और तकनीकी विशेषज्ञता रक्षा में स्वदेशीकरण केवल एक आर्थिक अनिवार्यता नहीं है; यह राष्ट्रीय सुरक्षा की आधारशिला है। एक मजबूत स्वदेशी रक्षा उद्योग महत्वपूर्ण

तकनीकी विशेषज्ञता को संरक्षित करता है और स्पिन-ऑफ प्रौद्योगिकियों और नवाचार को बढ़ावा देता है, जो रक्षा उत्पादन के लिए अंतर्निहित हैं। यह केवल एक रणनीतिक विकल्प नहीं है; यह एक सुरक्षा अनिवार्यता है। भारत की सुरक्षा चुनौतियां बहुआयामी हैं, जिनमें उरी और पठानकोट से लेकर पुलवामा हमले शामिल हैं। ये घटनाएं स्वदेशीकरण की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती हैं, जिससे रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता सुनिश्चित होती है। छिद्रपूर्ण सीमाओं और शत्रुतापूर्ण पड़ोसियों द्वारा चिह्नित पड़ोस में, आत्मनिर्भरता एक लक्जरी नहीं बल्कि एक आवश्यकता है।

आर्थिक प्रभाव और रोजगार सृजन रक्षा विनिर्माण क्षेत्र उद्योगों का एक शक्तिशाली जनरेटर है। ये सहायक उद्योग रोजगार के अवसर प्रदान करके एक लहर प्रभाव पैदा करते हैं। सरकारी अनुमानों से संकेत मिलता है कि रक्षा संबंधी आयात में 20-25% की कमी से आर्थिक विकास के लिए भारत की आकांक्षाओं के अनुरूप अतिरिक्त 100,000 से 120,000 अत्यधिक कुशल नौकरियां पैदा हो सकती हैं। सामरिक क्षमता और वैश्विक स्थिति एक आत्मनिर्भर, आत्मनिर्भर रक्षा उद्योग वैश्विक भू-राजनीति में भारत की स्थिति को बढ़ाता है। यह राष्ट्र को शीर्ष वैश्विक शक्तियों के बीच रखता है, अपने प्रभाव और रणनीतिक क्षमताओं को मजबूत करता है। राष्ट्रवाद और देशभक्ति को बढ़ावा देना रक्षा उपकरणों का स्वदेशी उत्पादन राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना पैदा करता है। यह न केवल भारतीय सशस्त्र बलों में विश्वास पैदा करता है बल्कि आबादी के बीच अखंडता और संप्रभुता की गहरी भावना का पोषण भी करता है। यह अपने हितों की रक्षा करने और अपनी संप्रभुता की रक्षा करने की राष्ट्र की क्षमता की पुष्टि है। स्वदेशी रक्षा में भारत की प्रगति भारत ने स्वदेशी रक्षा विकास में उल्लेखनीय प्रगति की है:

आईएनएस विक्रांत: पहला स्वदेशी विमानवाहक पोत, आईएनएस विक्रांत, भारत के नौसैनिक इंजीनियरिंग कौशल को दर्शाता है।

तेजस विमान: कावेरी इंजन के विकास में चुनौतियाँ उच्च तकनीक रक्षा में आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

प्रोजेक्ट-75: छह उन्नत पनडुब्बियों के निर्माण के लिये एक सहयोगात्मक प्रयास समुद्री शक्ति के लिये भारत की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।

धनुष आर्टिलरी: एक स्वदेशी लंबी दूरी की तोपखाने की बंदूक जो अपने 81% घटकों को स्थानीय रूप से प्राप्त करती है।

अरिहंत पनडुब्बी: भारत की पहली स्वदेशी परमाणु पनडुब्बी, जिसे बीएआरसी और डीआरडीओ के साथ साझेदारी में विकसित किया गया है।

अग्नि V: अन्य स्वदेशी मिसाइल परियोजनाओं के साथ-साथ वर्ष 2013 से आईसीबीएम धारक के रूप में भारत की स्थिति।

अत्याधुनिक परियोजनाएँ: पिनाका, ब्रह्मोस और अर्जुन टैंक जैसी उपलब्धियाँ भारत की क्षमताओं को प्रदर्शित करती हैं। रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भर रक्षा में आत्मनिर्भरता का भारत का लक्ष्य उपायों और पहलों की एक श्रृंखला में स्पष्ट है। 928 वस्तुओं की नवीनतम सूची आयात प्रतिस्थापन पर जोर देती है, लड़ाकू विमानों, ट्रेनर विमानों, युद्धपोतों और गोला-बारूद के लिए स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा देती है। इस बदलाव का उद्देश्य आयात निर्भरता को कम करना और घरेलू रक्षा उद्योग को बढ़ावा देना है। भारत ने स्वदेशीकरण के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए विभिन्न हथियारों और प्लेटफार्मों पर चरणबद्ध आयात प्रतिबंध लगाए हैं।

साइबर सुरक्षा: बढ़ते साइबर खतरों के लिये संवेदनशील रक्षा डेटा के लिये बेहतर सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है।

पर्यावरण और जलवायु कारक: बुनियादी ढाँचे और तत्परता पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर विचार करने की आवश्यकता है।

लॉजिस्टिक चुनौतियाँ: दूरस्थ क्षेत्रों में आपूर्ति श्रृंखलाओं को बनाए रखने से लॉजिस्टिक कठिनाइयाँ आती हैं।

अंतर-सेवा समन्वय: प्रतिद्वंद्विता के कारण सशस्त्र बलों के बीच सामंजस्य सुनिश्चित करना जटिल हो सकता है।

निर्यात विनियम: अन्य देशों के प्रतिबंध महत्त्वपूर्ण रक्षा प्रौद्योगिकियों तक पहुँच को सीमित कर सकते हैं।

सार्वजनिक धारणा और जवाबदेही: गोपनीयता सार्वजनिक अविश्वास और पारदर्शिता एवं जवाबदेही के बारे में चिंताओं को जन्म दे सकती है। इन चुनौतियों का समाधान करना भारत के रक्षा क्षेत्र के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा की प्रभावी रूप से रक्षा करने के लिए महत्वपूर्ण है। भारत में रक्षा क्षेत्र एक बहुआयामी पारिस्थितिकी तंत्र है जिसमें सेना, नौसेना और वायु सेना के साथ-साथ अर्धसैनिक बल, डीआरडीओ जैसे अनुसंधान संगठन और रक्षा विनिर्माण इकाइयां शामिल हैं। इन वर्षों में, भारत विदेशी उपकरणों पर निर्भरता से स्वदेशी नवाचार और वैश्विक सहयोग पर जोर देने के लिए विकसित हुआ है। आईएनएस विक्रांत विमानवाहक पोत, तेजस विमान और स्वदेशी मिसाइल परियोजनाओं जैसी उपलब्धियां प्रगति को उजागर करती हैं। सुरक्षा अनिवार्यताओं, आर्थिक प्रभाव और तकनीकी प्रगति के कारण रक्षा में आत्मनिर्भरता का पीछा महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, बजट की कमी, नौकरशाही लाल फीताशाही, और भू-राजनीतिक तनाव जैसी चुनौतियां बनी रहती हैं, जिसके लिए निरंतर ध्यान और नवाचार की आवश्यकता होती है।

शहीद भगत सिंह

सुश्री मधुरा मयूर पायरे
प्रशिक्षु (एटीएस)

एक तस्वीर देखी थी तेरी
साथी खटिये पे बैठा था तू,
सिर से पाँव तक बेड़ियों में बंधा था तू
फिर भी चेहरे पे मुस्कान लिए,
"इन्कलाब" के नारे लगा रहा था तू।
क्या शहादत थी तेरी
सूरज न डूबने वाले साम्राज्य को
यूंहीं झुका देता था तू॥

कैसे कोई जवानी की दहलीज पे
हंस के फाँसी पर चढ़ जाता है?
कैसे कोई खुशनुमा जिंदगी का दामन छोड़
मौत को बाहों में भर लेता है?
ये सोच के मैं हैरान हो जाती हूँ।
क्या जलियांवाला की मिट्टी भी शामिल थी
सच बता, किस मिट्टी से बना है तू॥

अंग्रेजों की गुलामी को
जवान हिंदुस्तान का करारा जबाब था तू,
तेरे खून से लिखा गया स्वतंत्रता का इतिहास
भारत माँ के ताज का चमकता सितारा था तू।
आग था तू ! तूफान था तू।
ताज भी, नाम से तेरे 'भगत'
हिंदुस्तान का खून खौलता है
वतन पर मर-मिटने की जो,
चिंगारी तुमने जलायी थी।
आज भी, हर दिल में उसका लावा उबलता है।
माना उस दिन मौत हुई थी तेरी
फिर भी, आज भी हम में है – जिंदा तू॥

प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला (एटीएस):

प्रशिक्षण के साथ व्यक्तित्व विकास की दिशा में एक सार्थक प्रयास

श्री अरुणेश मुदगल
प्रबंधक (प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला)

प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला (एटीएस) अलकोक यार्ड (ऑफशोर यार्ड) में बुनियादी प्रशिक्षण केंद्रो के साथ सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए श्री एस. बी. तिवारी, अपर महाप्रबंधक के नेतृत्व में सफलतापूर्वक कार्यशील है।

कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय, भारत सरकार की निगरानी में कुल 11 व्यवसायों में व्यवसायिक प्रशिक्षुओं को प्रति वर्ष चयन कर प्रशिक्षण देना सुनिश्चित किया जा रहा है, जो की निम्नलिखित है:

***ड्राफ्ट्समन (मेकेनिकल), *इलेक्ट्रिशियन, *फिटर, *पाइप फिटर, *स्ट्रक्चरल फिटर (रेगुलर एवं एक्स. आई.टी.आई. दोनों सम्मिलित है), *कारपेंटर, *इलेक्ट्रोनिक मैकेनिक, *आई.सी.टी.एस.एम , *COPA, *RAC, *रिगर एवं *वेल्डर (गैस एवं इलेक्ट्रिक)।**

वर्तमान में प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला (एटीएस) में सभी वर्गों एवं व्यवसायों में प्रशिक्षण ले रहे प्रशिक्षओं की कुल संख्या 925 है, जिसमें व्यवसायिक (625), इंजीनियरिंग स्नातक, सामान्य स्नातक एवं डिप्लोमा (200) और समुद्री अभियांत्रिकी (100) प्रशिक्षण से संबन्धित प्रशिक्षु शामिल हैं।

प्रशिक्षु प्रशिक्षण विभाग (एटीएस) माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड के लिए तकनीकी क्षेत्रों में रोजगार, कौशल विकास और उद्यमशीलता से संबन्धित क्षेत्रों में विकास के लिए निरंतर कार्यरत है और अपना यथा संभव सफलतापूर्वक योगदान दे रहा है एवं भविष्य में भी कंपनी के विकास में कार्यशील रहेगा।

प्रशिक्षुओं के कौशल विकास और उद्यमशीलता बढ़ाने के उद्देश्य से प्रशिक्षु प्रशिक्षण विभाग (एटीएस) प्रतिवर्ष विश्व युवा कौशल दिवस पर प्रशिक्षुओं द्वारा बनाए गए विभिन्न टेक्निकल प्रोजेक्ट्स की प्रदर्शनी लगाता है।

दिनांक 15 जुलाई 2025 को भी प्रशिक्षुओं द्वारा बनाए गए प्रोजेक्ट्स को प्रदर्शित किया गया। इस स्किल मेले में कुल 93 प्रोजेक्ट्स प्रदर्शित किए गए एवं एक सप्ताह तक यह प्रदर्शनी एटीएस में लगाई गई। कौशल के इस मेले में प्रशिक्षु प्रशिक्षण विभाग में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे सभी प्रशिक्षुओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

यह कार्यक्रम बताता है कि युवाओं को आधुनिक कार्यबल में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल से सुसज्जित करना कितना महत्वपूर्ण है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी विकसित हो रही है और नए उद्योग उभर रहे हैं, युवाओं को एक अधिक जटिल कार्य बाजार में नेविगेट करने के लिए तैयार होना चाहिए।

प्रशिक्षु प्रशिक्षण शाला (एटीएस) द्वारा आयोजित यह स्किल मेला इस आवश्यकता पर बल देता है कि शिक्षा और प्रशिक्षण प्रणालियाँ इन बदलावों के अनुसार ढलें, ताकि युवा प्रासंगिक और भविष्य केंद्रित कौशल प्राप्त कर सकें। इसमें तकनीकी कौशल के साथ-साथ समस्या-समाधान, रचनात्मकता और टीमवर्क जैसे सॉफ़्ट कौशल भी शामिल हैं।

इस दिन पर प्रशिक्षु प्रशिक्षणशाला (एटीएस) द्वारा युवा कौशल का उत्सव मनाकर, हम न केवल उनकी संभावनाओं को सम्मानित करते हैं, बल्कि एक अधिक कुशल, सतत और समावेशी वैश्विक कार्यबल के विकास को भी प्रोत्साहित करते हैं।

विश्व युवा कौशल दिवस 2025 युवाओं को जीवन भर सीखने को अपनाने और कल की दुनिया की चुनौतियों के लिए तैयार होने के लिए प्रेरित करता है।

इस लगातार आगे बढ़ती दुनिया में आपको एक भी अनोखा स्किल दूसरों से बेहतर बना सकता है। यही वजह है कि अब तमाम स्किल डेवलपमेंट कोर्स चलन में हैं। आप स्टूडेंट हों या कहीं जॉब करते हों, आजकल हर कंपनी और संस्थानों में कुछ खास स्किल्स वाले लोगों को वरीयता दी जाती है। स्किल डेवलपमेंट कोर्स कर लेने के बाद आप अपनी फील्ड और इंडस्ट्री की जरूरत के हिसाब से खुद को ढाल सकते हैं।

कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट) क्या है?

कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट) कोर्स की बात हो उससे पहले समझ लें कि यह कौशल विकास होता क्या है। जो भी काम हम करते हैं उसमें बेहतर होना ही स्किल डेवलपमेंट है। खाना पकाना, पढ़ना लिखना, खेलना और कोई भी दूसरा काम या हुनर, उसे पूरे मन से, मेहनत से, सही प्रशिक्षण और पढ़ाई से अपने हुनर को और बेहतर बनाना, ये ही है कौशल विकास।

कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट) के दो सबसे जरूरी हिस्से हैं:

- व्यक्ति के स्किल (skills) और नॉलेज गैप्स (Gaps) को पहचानना।
- इन स्किल पर काम करना और उन्हें निखारना। ये बहुत जरूरी है क्योंकि आपके फ्यूचर प्लान आपके स्किल की बदौलत ही पूरे होते हैं।

कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट)दो तरह का होता है:

- हार्ड स्किल (Hard skills)- ऐसे स्किल जो किसी खास काम को करने में मदद करते हैं। जैसे किसी खास विषय का जानकार होना, कोई खास योग्यता और ट्रेनिंग। इसके साथ किसी खास भाषा का ज्ञान, ग्राफिक डिजाइनिंग, स्क्रिप्टिंग आदि।
- सॉफ्ट स्किल (Soft skills)- आपकी पर्सनालिटी से जुड़ी खासियतें जैसे कॉलेबोरेशन, मैनेजमेंट (Management), प्रोब्लम सोलविंग (Problem Solving), स्ट्रेस मैनेजमेंट (Stress Mangement), चुनौतियों को स्वीकारने की कला आदि।

कौशल विकास ऑनलाइन कोर्स

कौशल विकास और मेक इन इंडिया को बढ़ावा देने के लिए नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (National skill development corporation) भारत में अनगिनत ऑनलाइन स्किल डेवलपमेंट कोर्स ऑफर करता है। आप कई सारे फ्री ऑनलाइन कोर्स मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (MOOCs-Massive open online courses) से सीख सकते हैं, जैसे कि नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (National Skill Development Course), मूक्स (MOOCs), कोर्सेरा (COURSERA), अलिसन (Allison), स्किल शेयर (Skill share), एनएसडीसी का ई-स्किल इंडिया (e-skill India NSDC) आदि।

कौशल विकास योजना लोन

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय की ओर से चलाई जाती है। इसके तहत युवाओं को विशेष उद्योगों के लिए तैयार किया जाता है। साथ ही इस योजना का उद्देश्य युवाओं को रोजगार प्रदान करना है। इसके साथ ही युवाओं को अपना काम शुरू करने के लिए आत्मनिर्भर बनाने के लिए भी यह योजना बेहद महत्वपूर्ण मानी गई है। इस स्कीम में कम पढ़े लिखे या 10वीं, 12वीं कक्षा ड्राप आउट युवाओं को उद्योगों से जुड़ी ट्रेनिंग दी जाती है। इसके साथ ही युवाओं को अपना रोजगार शुरू करने के लिए 10 लाख रुपये तक का लोन भी मिलता है।

- ऑनलाइन स्किल डेवलपमेंट – बहुत से ऑनलाइन स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम चलाए जा रहे हैं जैसे फोटोशॉप, विंडोज़ 10, लोगो डिज़ाइन, वीडियो एडिटिंग, वेब डिज़ाइनिंग, ग्राफ़िक, कंप्यूटर बेसिक, मोबाइल रिपेयरिंग, डिजाइनिंग, MOOCs फ्री ऑनलाइन स्किल डेवलपमेंट कोर्सेज (हिंदी

मीडियम), कोरलड्रा, टेक टिप्स, फोटोग्राफी, टैली आदि।

- साथ ही इंटरनेशनल फ्री ऑनलाइन स्किल डेवलपमेंट कोर्सेज (हिंदी मीडियम) भी उपलब्ध हैं जैसे हाउ थिंग्स वर्क – कोर्सेरा, वर्जिनिया यूनिवर्सिटी, लेसन: टेलीफोन लैंग्वेज – कोर्सेरा, जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, स्ट्रेटेजिक मैनेजमेंट – एड्क्स, IIM, बैंगलोर, प्लानिंग एंड डिज़ाइन ऑफ़ सैनिटेशन सिस्टम्स एंड टेक्नोलॉजीज – कोर्सेरा, कॉर्पोरेट फाइनेंस – एड्क्स, एकाउंटिंग फॉर डिसीजन मेकिंग – एड्क्स, आईआईएम, बैंगलोर, पीपल मैनेजमेंट – एड्क्स, आईआईएम, बैंगलोर, ऑर्गेनाइजेशनल डिज़ाइन: क्रिएटिंग कॉम्पीटीटिव एडवांटेज – एड्क्स, आईआईएम, बैंगलोर, स्ट्रेटेजी एंड दी सस्टेनेबल एंटरप्राइज – एड्क्स, आईआईएम, बैंगलोर आदि।

इसरो, एम्स, नई दिल्ली वर्कशॉप सीरीज, नफारी ट्रेनिंग प्रोग्रामिंग की ओर से भी आप अपने कौशल को बेहतर कर सकते हैं।

इसके अलावा **ग्राफिक डिजाइनिंग कोर्स, फोटो/वीडियो एडिटिंग, डिजिटल मार्केटिंग, बिजनेस एंड मैनेजमेंट, एकेडमिक एंड बिजनेस राइटिंग, प्रोग्रामिंग, क्रिएटिव आर्ट्स एंड डिजाइन्स, अप्लाइड एंड प्योर साइंस (Applied and Pure Science), Agriculture and Veterinary Medicine, Social Studies and Media** आदि कोर्सेज भी ऑनलाइन किए जा सकते हैं।

इस कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट) कोर्स के साथ आप अपनी क्रिएटिव साइड विकसित कर सकते हैं। वीडियो गेम्स की क्रिएटिविटी से लेकर पेंटिंग तक इस कोर्स में कवर की जाती है।

भारत में मौजूद कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट) कोर्स के शीर्ष संस्थान

द मिनिस्ट्री ऑफ स्किल्स डेवलपमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप ऑफ इंडिया (MSDI) ने पिछले दिनों, नेशनल स्किल डेवलपमेंट स्ट्रेटजी (NPSD) 2009 का उद्घाटन किया है। इसका मकसद उम्मीदवारों को कौशल विकास कोर्स सिखाने की कोशिश करना था। साल 2015 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी ने नए प्रोग्राम को लॉंच किया था, जिसका नाम था स्किल इंडिया (Skill India)। जिसमें कई कोर्स ऑफर किए गए थे जैसे संकल्प, स्टार और उड़ान।

कौशल विकास योजना सिलाई सेंटर

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत सिलाई प्रशिक्षण का लाभ कम पढ़े लिखे युवा (10वीं, 12वीं कक्षा ड्राप आउट) ले सकते हैं। इस योजना के तहत फीस नहीं चुकानी पड़ती, बल्कि बतौर पुरस्कार राशि करीब 8000 रुपये सरकार देती है। इस काम को करने के लिए मुख्य खर्चा सिलाई मशीन पर ही आता है। एक अच्छी सिलाई मशीन 4 से 5 हजार में आ जाएगी। इसके अलावा मशीन के स्टैंड और अन्य तरह के छोटे खर्चे हैं। कुल मिलाकर कहा जाए तो आप 7 से 8 हजार रूपए की लागत में इस काम को शुरू कर सकते हैं।

आज के टेक्नोलॉजी के समय में इस काम की जरूरत लगातार बढ़ रही है। तो अगर आप क्रिएटिविटी की इस नई दुनिया का हिस्सा बनना चाहते हैं तो ग्राफिक डिजाइनिंग में कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट) कोर्स अपने लिए चुन लीजिए। कई सारे इंस्टीट्यूट और वेबसाइट जैसे पर्ल एकेडमी, सिराक्यूज यूनिवर्सिटी, Udemy और Coursera कई सारी ऑनलाइन क्लास ऑफर करते हैं जिनमें आप पार्ट टाइम भी सीख सकते हैं।

कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट) कोर्स के लिए चुनौती ये है कि इनको सीखने वाले उम्मीदवारों की संख्या कैसे बढ़ाई जाए। हर इंडस्ट्री में बदलते विकास के नजरिए के चलते हमें बेहतर नजरिए वाले लोगों की जरूरत है। ये वो लोग हैं जो देश को तरक्की के रास्ते आगे ले जा सकेंगे।

प्रशिक्षुओं की प्रतिक्रियाएं

हमारे संस्थान में आयोजित कौशल विकास प्रदर्शनी (स्किल डेवलपमेंट एक्ज़िबिशन) में भाग लेकर मुझे बहुत अच्छा अनुभव हुआ। इस प्रदर्शनी में विभिन्न ट्रेड के प्रशिक्षुओं ने अपने-अपने प्रोजेक्ट और तकनीकी कौशल को प्रस्तुत किया। इससे हमें नई-नई तकनीकों, मशीनों और कार्यप्रणालियों के बारे में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ।

इस आयोजन ने हमारे अंदर आत्मविश्वास बढ़ाया और यह सिखाया कि कैसे हम अपने सीखे हुए ज्ञान को वास्तविक जीवन में उपयोग कर सकते हैं। शिक्षकों और प्रशिक्षकों द्वारा दिए गए मार्गदर्शन से हमें अपने कौशल को और निखारने की प्रेरणा मिली।

ऐसे आयोजन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत उपयोगी हैं। मैं आयोजकों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने हमें अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर दिया।

श्री हर्षकुमार
फिटर (प्रशिक्षु)

हमारे एटीएस स्कूल में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ कौशल विकास प्रदर्शनी (स्किल डेवलपमेंट एक्ज़िबिशन) आयोजित की गई, जो मेरे लिए बहुत ही सीख देने वाला अनुभव रहा। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य विद्यार्थियों में तकनीकी कौशल और नवाचार को बढ़ावा देना था।

मैंने अपनी सहेलियों के साथ 'सरफ़ेस गेज' बनाया, जो मार्किंग और लेवलिंग में उपयोग होने वाला सटीक उपकरण है। इसकी डिजाइन से लेकर तैयार होने तक लगभग 15 दिन लगे। शॉप के कर्मचारियों और शिक्षकों ने पूरा सहयोग दिया। प्रदर्शनी में हमारे प्रोजेक्ट की सभी ने सराहना की गई।

अन्य विद्यार्थियों ने भी इलेक्ट्रिकल और मैकेनिकल मॉडल प्रस्तुत किए, जो प्रेरणादायक थे। इस कार्यक्रम से मेरा आत्मविश्वास और तकनीकी ज्ञान बढ़ा।

अंत में, मैं अपने प्रशिक्षकों और एटीएस प्रशासन का धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने हमें सीखने और अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर दिया। इस अनुभव ने न केवल तकनीकी रूप से समृद्ध किया बल्कि मुझे एक बेहतर टीम सदस्य और जिम्मेदार विद्यार्थी कि प्रेरणा भी दी।

सुश्री नम्रता आबाजी गंगावणे
फिटर (प्रशिक्षु)

स्कोप

मौजूदा समय को देखते हुए ग्लोबलाइजेशन ऊंचाई पर है तो प्रोफेशनल्स की अपेक्षाएं भी बहुत ऊंची हैं। अत: कौशल विकास कोर्स का होना अच्छी जॉब के नजरिए से बहुत जरूरी है। इंडस्ट्री की भी यही जरूरत है। कौशल विकास को हासिल करने के लिए हमें इंडस्ट्री विशिष्ट कौशल पर ध्यान देने की जरूरत है।

सर जे जे ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स, मुंबई के प्लास्टिक सर्जरी विभाग को आधुनिक सुविधाएं प्रदान करना।

श्री रोहित पांडया
प्रबंधक (सीएसआर)

वित्त वर्ष 2023-24 हेतु भारत सरकार के सार्वजनिक उद्यम विभाग द्वारा घोषित वार्षिक कॉर्पोरेट सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी (सी.एस.आर.) थीम के अनुरूप, सर्जिकल ऑपरेटिंग माइक्रोस्कोप की खरीद हेतु वित्तीय सहायता के लिए सर जे जे ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स, मुंबई के प्लास्टिक सर्जरी विभाग से एक प्रस्ताव प्राप्त हुआ था।

परियोजना की आवश्यकता: सर जे जे ग्रुप ऑफ़ हॉस्पिटल्स एक तृतीयक देखभाल अस्पताल है और मुंबई का एकमात्र प्रमुख राज्य संचालित अस्पताल है। यह अस्पताल एशिया के सबसे पुराने (180 वर्ष) चलने वाले अस्पतालों में से एक है और राज्य की एक बड़ी आबादी की सेवा करता है।

परियोजना की अवधारणा के समय, अस्पताल के प्रतिनिधियों ने बताया कि उच्च रिज़ॉल्यूशन सर्जिकल ऑपरेटिंग माइक्रोस्कोप (high resolution Surgical Operating Microscope) की आवश्यकता थी क्योंकि जटिल सूक्ष्म-संवहनी सर्जरी (complex micro-vascular surgeries) के लिए रक्त शिराओं को जोड़ने की आवश्यकता होती है, जो बाल की नोक से भी पतली होती हैं। सरकारी अस्पताल होने के कारण, सर जे जे ग्रुप ऑफ़ हॉस्पिटल्स में दुर्घटनाओं/कैंसर के कई मामले सामने आए हैं, जिसमें हाथ, पैर, आकृतियाँ आदि जैसे अंगों को जोड़ने/पुनर्निर्माण करने की अक्सर आवश्यकता होती है। प्रभावी चिकित्सा उपचार के अभाव में, मरीज़ अपने हाथ, उंगली आदि सहित अपने अंगों को खो देते हैं जो अंततः उनकी आजीविका को प्रभावित करता है।

सर जे जे ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के प्लास्टिक सर्जरी विभाग में हाई रेजोल्यूशन सर्जिकल माइक्रोस्कोप

परिणाम: मार्च 2024 में अस्पताल में आधुनिक सर्जिकल ऑपरेटिंग माइक्रोस्कोप और कॉटरी (Surgical Operating Microscope & Cautery) की व्यवस्था की गई और सितंबर 2024 तक 284 सर्जरी की जा चुकी हैं। इस परियोजना से निम्नलिखित प्रमुख परिणाम प्राप्त होने की उम्मीद है।

» अस्पताल को जटिल और महंगी सर्जरी करने में सक्षम होगा, जिससे मुख्य रूप से गरीब मरीजों को लाभ होगा

» कम रुग्णता वाले निचले अंग पुनर्निर्माण रोगियों को शीघ्र चलने में सक्षम बनायेगा, ताकि रोगी यथाशीघ्र अपने परिवार का भरण-पोषण कर सके।

» इससे मरीजों का अस्पताल में रुकने का समय कम हो जाएगा और इससे मरीजों/अस्पताल के संसाधनों की बचत होगी।

"सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि"

श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ला
प्रबंधक (संरक्षा - अनिक चेंबूर यार्ड)

"सत् यस्य आचरणं स: सत्यनिष्ठ:" अर्थात जिसका आचरण सत्य है वह सत्यनिष्ठ है।

आधुनिक युग में अगर सच्चे अर्थ में देश को विकास रूपी प्रगति पथ पर तीव्र गति से अग्रसर करना है तो सत्यनिष्ठा की संस्कृति और समर्पण की प्रवृत्ति का पूर्णतया पालन करना होगा। राष्ट्र के प्रति सच्ची लगन और पूर्ण समर्पण की भावना वर्तमान भारत की समृद्धि एवं सर्वांगीण तथा बहुमुखी विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। अतः उपरोक्त कथन पर अक्षरश: विचार करके इसे पूर्णत: सत्यार्थ करना होगा।

सत्यनिष्ठा का शाब्दिक अर्थ है सत्य+निष्ठा अर्थात सच्ची लगन यानी निष्ठावान प्रवृत्ति। मोह, लोभ और लालच का परित्याग करके अंतरात्मा की इच्छा के अनुरूप, निष्पक्ष एवं निस्वार्थ, नैतिक मूल्यों, मानकों, नियमों, सिद्धांतों एवं कानून का अनुसरण करके किया गया प्रत्येक कर्म सदाचार एवं सत्यनिष्ठायुक्त कार्यों की ही श्रेणी में आता है। सत्यनिष्ठ एवं सदाचारी मनुष्य सच्चे, ईमानदार, बुद्धिमान, कर्तव्यपरायण, विश्वसनीय, कर्मठ, निडर, व्यसनमुक्त और सुदृढ़ व्यक्तित्व वाले होते हैं। इनके दैनिक जीवन में कर्तव्यपरायणता, सदाचार एवं पारदर्शिता की झलक सदैव प्रतिबिम्बित होती है।

निष्ठावान व्यक्तियों को चोरी, घूसख़ोरी, दलाली, जमाखोरी, अनावश्यक उपहारों का आदान–प्रदान, नियम कानून व मानकों की अवहेलना, कामचोरी, सच्चाई पर पर्दा डालना, कर्तव्य के प्रति उदासीनता, गुनाहों को छुपाना, भाई–भतीजा, वंशवाद एवं परिवारवाद को बढ़ावा, तथ्यों को भ्रमित करना और पारदर्शिता का अभाव इत्यादि जैसे घृणित कृत्यों से सख्त नफरत होती है। सदाचारी और सत्यनिष्ठ व्यक्तियों को वर्तमान युग में प्रचलित दैनिक भ्रष्टाचार के दुष्प्रभाव की प्रचण्डता से निरंतर जूझना भी पड़ता है जो कि कुछ निम्न प्रकार से वर्णित की जा सकती है।

पल–पल गिरती नैतिकता से, भारत माँ का आँचल धूमिल है।
धन-लोलुपता और दुराचार, गिरती जन मानवता शामिल है॥
शिक्षा, व्यापार और राजनीति, हर जगह भ्रष्टता फैली है॥
मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों और मजारों की भी चादर मैली है॥
नेता, अभिनेता, पुलिस, वकील, डॉक्टर भी बने लुटेरे अब।
दैनिक जीवन के हर प्रांगण में भ्रष्टाचारी फैले बहुतेरे अब॥
दफ्तरों में दलाली घूसखोरी चोरी और कमीशन खोरी है।

भ्रष्टाचारियों के इस तांडव में सत्यनिष्ठा मानो कमजोरी है॥
नियम, कानून, सिद्धान्त और मानक भ्रष्ट तन्त्र में ऐसे टूट रहे।
कहते "वीरेन्द्र" अपनी माँ का दामन जैसे उसी के बच्चे लूट रहे॥

सच्चे अर्थो में आधुनिकता के नाम पर देश ने विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में भले ही अकल्पनीय प्रगति की है परन्तु हमारी सत्यनिष्ठा, शिष्टाचार, सभ्यता, संस्कार, कर्तव्यपरायणता और नैतिकता का दैनिक पतन भी हुआ है। दुष्परिणाम स्वरुप आज अपना देश करप्शन पर्सेप्शन इंडेक्स के 180 देशों की सूची में 85 वें पायदान पर पड़ा हुआ है जबकि डेनमार्क, न्यूज़ीलैण्ड, फिनलैण्ड व सिंगापुर जैसे देश शीर्ष पर विराजमान है। हमारा पड़ोसी पाकिस्तान 140 वें स्थान पर तथा सीरिया, सोमालिया और दक्षिण सूडान अन्तिम पायदान यानी सबसे भ्रष्ट देशों की श्रेणी में आते हैं। उपरोक्त आंकड़ों से पूर्णत: स्पष्ट है कि **जिस देश के नागरिक निष्ठावान, कर्तव्यनिष्ठ और सदाचारी हैं, वो विकसित है और जहाँ भ्रष्टाचार सर्वव्यापी है वे देश बहुत पिछड़े और अविकसित हैं।**

देश के प्रति अटूट निष्ठा और देश-भक्ति का ज्वलंत उदाहरण वर्तमान परिपेक्ष्य में इज़राइल के नागरिकों को माना जा सकता है। एक छोटा और कम आबादी वाला देश इज़राइल आज चारों तरफ प्रतिकूल परिस्थितियों और विरोधियों की चुनौतियों का जिस तरह डट कर सफलतापूर्वक मुक़ाबला कर रहा है ये उसके प्रत्येक नागरिक की सत्यनिष्ठा देशभक्ति और राष्ट्र के प्रति समर्पण का ही सफल परिणाम है जो कि विश्व के हर देश के सभी नागरिकों के लिए अनुकरणीय है।

सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता, कर्मठता, ईमानदारी और सदाचार की संस्कृति से अपराध, महंगाई, बेरोजगारी, आय की असमानता, कालाबाजारी, जनसंख्या वृद्धि, भुखमरी और प्रतिभा पलायन जैसी सर्वव्यापी सामाजिक कुरीतियों को नियंत्रित किया जा सकता है जिससे देश में हो रहे विकास कार्यों में प्रभावी तीव्रता हासिल होगी।

साथ ही साथ निरंतर भ्रष्टाचार उन्मूलन करना भी आज के समय की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में भारत की वर्तमान सरकार ने निम्नवत सराहनीय कदम भी उठाये हैं:-

1. डायरेक्ट बेनीफिट्स ट्रान्सफर सुविधा (DBT Initiatives) के माध्यम से सरकार द्वारा प्रदत्त आर्थिक सुविधाओं जैसे किसान सम्मान निधि और गैस सब्सिडी इत्यादि को आम जनता के खातों में सीधा जमा करना।
2. जन-खरीदारी अर्थात पब्लिक प्रोक्योरमेंट (Public Procurement) में ई–टेन्डरिंग की शुरुआत करना।
3. ई–गवर्नेन्स की शुरुआत एवं जटिल प्रावधानों का सरलीकरण करना।
4. गवर्नमेंट – ई – मार्केटप्लेस (GEM) की शुरुआत करना।
5. वर्ग "ख" और वर्ग "ग" समूह के कर्मचारी चयन प्रक्रिया में साक्षात्कार का उन्मूलन करना।
6. असन्तोषजनक परफार्मेन्स वाले कर्मचारियों को बाध्य रूप से रिटायर करने वाले कानून FR-56 (J) और AIS (DCRB) नियम 1958 को लागू करना।
7. ऑल इंडिया सर्विस रूल में क़ानूनी प्रक्रिया त्वरित करने सम्बन्धी परिवर्तन करना।
8. घूसखोरी, कमीशन खोरी इत्यादि को अपराधिक गुनाहों की श्रेणी में रखकर भ्रष्टाचार निरोधक कानून 1988 को संशोधित करना।
9. मुख्य सतर्कता आयोग की सिफारिश से बड़े – बड़े सौदों में इंटीग्रिटी पैक्ट (Integrity Pact) को सम्मिलित करना और धांधली होने पर शीघ्र एवं सुचारू रूप से जाँच करने की बाध्यता सुनिश्चित करना।
10. भ्रष्टाचार निरोधक कानून 1988 के अन्तर्गत लोकपाल

नियुक्ति प्रक्रिया की शुरुवात करना।

11. प्रति वर्ष हर सरकारी संस्थानों में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन करना जिसमें भ्रष्टाचार उन्मूलन शपथ, निबन्ध-लेखन, पोस्टर, उद्घोषवाक्य एवं प्रश्नोत्तरी संबंधित अनेकों प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन करना सम्मिलित है।

12. अत्याधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों एवं तकनीक के प्रभावी सदुपयोग से मानव नियन्त्रित सिस्टम को मशीन नियन्त्रित सिस्टम में परिवर्तित करने से भी भ्रष्टाचार उन्मूलन में काफी मदद मिल रही है। ऑनलाइन सेवायें, कम्प्यूटरीकृत आरक्षण नेट बैंकिंग जैसे कई उदाहरण इस क्षेत्र में सराहनीय कदम हैं। वास्तव में संपूर्ण सिस्टम में पारदर्शिता लाना एक अच्छा एवं प्रभावी कदम साबित होगा।

13. वर्तमान सरकार की भ्रष्टाचार के प्रति शून्य सहिष्णुता (Zero Tolerance) की नीति बहुत ही प्रभावी साबित हो रही है जिसके अंतर्गत नेता,अभिनेता, उद्योगपति जैसे बड़ी से बड़ी हस्तियों को भी अब जाँच एजेसियाँ निडर होकर अन्वेषित करके, जेल में डालकर उन पर मुकदमा चला रही हैं।

भ्रष्टाचारी सब हैं डरे हुए, उनका लुट रहा खजाना है।
" ना खायेंगे - ना खाने देंगे " सरकार ने ऐसा ठाना है॥
बड़ी – बड़ी हस्तियों की भी अब ऐसी शामत आई है।
नित छापेमारी की दबिश दे रही ई डी, सी बी आई है॥

अगर हमें अपने देश को विकास और समृद्धि के मार्ग पर तेजी से अग्रसर करना है तो कर्तव्यनिष्ठ, सदाचारी एवं निष्ठावान होकर देश के प्रति सम्पूर्ण समर्पण की भावना से निरंतर कार्य करने की अत्यन्त आवश्यकता है।

इसके लिये हमें आधुनिक एवं व्यवसायिक शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा को भी पाठ्यक्रमों में तत्काल प्रभाव से सम्मिलित करना होगा ताकि बच्चों, युवाओं और भावी पीढ़ियों में नैतिक मूल्यों का समावेश हो सके। हर माता-पिता को अपने बच्चों में ईमानदारी, सच्चाई, सेवाधर्म, कर्मठता, कर्तव्यनिष्ठा, सत्कर्म, बड़ों व गुरुओं के प्रति आदर, देश प्रेम, दया, करुणा और धार्मिक सहिष्णुता जैसे नैतिक मूल्यों को उभारना एवं संजोना होगा, ताकि बच्चों का शैक्षिक एवं चारित्रिक विकास के साथ-साथ सर्वांगीण और बहुमुखी विकास हो सके। उनके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ के लिये दैनिक योग एवं प्राणायाम भी काफी लाभप्रद होगा।

वर्तमान परिपेक्ष्य में युवाओं को ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता, मेहनती, संस्कारी, शिक्षित एवं सर्वतोमुखी प्रशिक्षण देने की अत्यन्त आवश्यकता है। ताकि उनके अन्दर सत्यनिष्ठा, देश प्रेम और राष्ट्र के प्रति अटूट समर्पण की भावना जागृत हो सके। सतर्कता जागरूकता सप्ताह रूपी अनवरत कदम से कम्पनी कर्मचारियों में न केवल एक मजबूत नैतिक प्रवृत्ति, देश भक्ति एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना का सतत विकास होगा, बल्कि हम अपने नैतिक मूल्यों, नियमों व मानकों का दैनिक अनुसरण करते हुए देश को समृद्धि प्रदान कर सकेंगे और तभी हर घर, गाँव, शहर, जनपद, प्रदेश और देश का सर्वांगीण विकास सम्भव हो सकेगा। इस प्रकार हमारा भारत देश सत्यनिष्ठा की संस्कृति से एक दिन अवश्य ही समृद्ध और विकसित राष्ट्र बनेगा। **"इसमें कोई संदेह नहीं"**

अगर राष्ट्र समृद्ध बनाना है, तो सत्यनिष्ठा संस्कृति जरुरी है।
अपनी मातृ–भूमि से सत्यप्रेम ही सच्ची श्रद्धा-सबुरी है॥
ऋषि मुनियों के हम वंशज हैं, फिर से निज चरित्र सुधारेंगे॥
खुद ही खुद की नैतिकता को, देशहित के लिए सवारेंगे॥
"सोने की चिड़िया" भारत माँ को, मिलजुल कर पुनः उबारेंगे॥
" जय हिंद जय भारत "

एक मतदान का महत्व ...

श्री नीलेश एस पंडित
प्रबंधक (पूर्व खंड-योजना)

- वर्ष 1645 में, एक वोट ने ओलिवर क्रॉमवेल को इंग्लैंड का नियंत्रण दे दिया।
- वर्ष 1649 में, एक वोट ने चार्ल्स प्रथम के निष्पादन का फैसला किया।
- वर्ष 1776 में, एक वोट ने भाषा के रूप में अमेरिका को जर्मन के बजाय अंग्रेजी दी।
- वर्ष 1868 में, एक वोट ने एंड्रयू जैक्सन को महाभियोग से बचाया।
- वर्ष 1923 में, एक वोट ने एडॉल्फ हिटलर को नाज़ी पार्टी का नेता बना दिया।
- वर्ष 1981 में, नहाऊ रूनी ने मानुस का चुनाव एक मत से जीत लिया।
- वर्ष 1998 में, वाजपेयी सरकार लोकसभा में एक वोट से हार गई थी।

नैतिक:- हर एक मतदान मायने रखता है। इसलिए जब चुनाव हो तो बाहर जाएं और मतदान करें।

सम्मिलित कार्रवाई (टीम वर्क) का महत्व

एक बार एमबीए के 4 छात्र देर रात तक पार्टी कर रहे थे, अगले दिन होने वाली परीक्षा के लिए अध्ययन नहीं किया। सुबह उन्होंने योजना के बारे में सोचा। उन्होंने खुद को उतना ही गंदा और अजीब बना लिया जितना वे ग्रीस और गंदगी के साथ हो सकते थे। फिर वे डीन के पास गए और कहा कि वे कल रात शादी में गए थे और वापस लौटने पर, उनकी कार का टायर फट गया और उन्हें कार को धकेल कर आना पड़ा और वे इस स्थिति में नहीं थे कि वे परिक्षा में उपस्थित हो सके। डीन एक न्यायप्रिय व्यक्ति थे इसलिए उन्होंने कहा कि आप सब 3 दिनों के बाद फिर से परीक्षा में बैठ सकते हैं। उन्होंने कहा कि वे तैयार हैं।

तीसरे दिन वे डीन के सामने पेश हुए। डीन ने कहा कि चूंकि यह एक विशेष शर्त थी, इसलिए चारों को परीक्षण के लिए अलग-अलग कमरों में रहने की आवश्यकता थी। वे सभी सहमत थे क्योंकि उन्होंने पिछले 3 दिनों में अच्छी तैयारी की थी।

परीक्षण में 100 के कुल अंकों के साथ 2 प्रश्न शामिल थे।

प्रश्न 1. अपना नाम लिखिए। (2 अंक)

प्रश्न 2. कौन सा टायर फट गया? (98 अंक)

नैतिक- याद रखें, सम्मिलित कार्रवाई बहुत महत्वपूर्ण है।

द अल्टीमेट ह्यूमन रेस - कॉमरेड्स मैराथन 2025

श्री सुरेश वेलंकर
यूटिलिटि हैंड (जनि-अनुरक्षण)

मैंने 8 जून, 2025 को दक्षिण अफ्रीका में कॉमरेड्स मैराथन की फिनिश लाइन पार की और पिछले कुछ साल मेरी आँखों के सामने घूम गए।

इस मैराथन को सबसे पुराना, सबसे लंबा और सबसे कठिन बताया जाता है।

इसे द अल्टीमेट ह्यूमन रेस भी कहा जाता है।

90 किलोमीटर की दूरी को खराब मौसम की स्थिति में 12 घंटे में पूरा करना था, जिसे मैं सभी की सद्भावना और भगवान की कृपा से 9 घंटे और 41 मिनट में पूरा करने में कामयाब रहा। इस साल का संस्करण पीटरमैरिट्जबर्ग से डरबन तक "डाउन रन" था।

मेरा पैतृक गाँव रत्नागिरी जिले में रसालगढ़, तालुका (खेड़) में भराडे वाडी है। मैं नौकरी के लिए ठाणे आया और माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड नामक कंपनी में काम करना शुरू किया और पिछले कुछ सालों से ठाणे में हूँ। बेशक, गांव हमेशा जानता है कि मेरी दौड़ने की यात्रा 2022 में शुरू हुई। मैंने 6 महीने तक सीताराम नांदोस्कर सर के मार्गदर्शन में रहकर 3 घंटे और 47 मिनट में मुंबई मैराथन पूरी की। पिछले कुछ महीनों से मैं दीपक बुधरानी सर और उनके कोचिंग पार्टनर आशीष बोधनकर सर के साथ कॉमरेड के लिए ट्रेनिंग कर रहा था। मैं अपनी नौकरी को बनाए रखते हुए उनके द्वारा दी गई योजना और वर्कआउट कर रहा था।

2022 से, मैं जहाँ भी दौड़ा, मेरे दिमाग में हमेशा यही ख्याल रहता था कि मुझे कॉमरेड करना है और इसी तरह मैंने ऐसी मैराथन में हिस्सा लिया।

टाटा मुंबई मैराथन में मुझे सब-4 टाइमिंग मिली और मेरा आत्मविश्वास बढ़ा।

पिछले साल, मैं पहली बार कोंकण कोस्टल हाफ मैराथन का एंबेसडर बना और अपने कई परिचितों को वहाँ आने के लिए प्रोत्साहित किया।

मैं उन सभी के लिए जिम्मेदार था और मेरे दिमाग में एक अलग विचार आया। मैंने अपनी गति धीमी कर दी, मेरे साथ आए सभी धावकों को आगे जाने दिया और जब मुझे यकीन हो गया कि सभी आगे निकल गए हैं, तो मैंने फिर से गति बढ़ा दी।

इसके पीछे मेरा उद्देश्य यह था कि मेरे कोंकण की घुमावदार सड़कों पर कोई भी डरे नहीं और किसी को यह न लगे कि सुरेश हमें आगे ले आया है।

मैंने फिर से गति बढ़ाई और 5 किमी से 10 किमी के भीतर सभी को अपने साथ पकड़ लिया। मुझे एहसास हुआ कि सभी ने उस मार्ग पर अच्छा अभ्यास किया था और फिर मैंने मजबूती से दौड़ पूरी की और पोडियम हासिल किया।

वहां पोडियम पाने के इच्छुक कई लोग कॉमरेड बनकर आए थे, उनमें से एक ने कहा कि यह कॉमरेड जैसा मार्ग वाला हाफ मैराथन है। एक बार फिर मेरे दिमाग में कॉमरेड का जुनून भड़क उठा और फिर से गंभीरता से अभ्यास शुरू हो गया। मैंने लोनावला अल्ट्रा दौड़ लगाई।

दीपक बुधरानी सर हर महीने लोनावला अभ्यास की व्यवस्था करते थे। मैंने इसे कभी नहीं छोड़ा।

मेरे जैसे मूल रूप से कोंकण से आने वाले व्यक्ति के लिए उतार-चढ़ाव कोई नई बात नहीं थी, लेकिन 90 किलोमीटर की दूरी क्यों न तय की जाए? यह एक संदेह था।

लेकिन अभ्यास इतना था कि मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया।

मैराथन के दौरान मौसम बहुत गर्म और उमस भरा था, जिससे दौड़ना और भी चुनौतीपूर्ण हो गया। लगभग 35-40 किलोमीटर के बाद, मेरे सहित लगभग सभी धावकों को ऐंठन होने लगी। मैंने दौड़ बहुत तेज़ गति से शुरू की थी, लेकिन 39 किलोमीटर के निशान पर, मेरे पैरों में बहुत ऐंठन होने लगी। दौड़ना मुश्किल हो रहा था, लेकिन मैंने अपना हौसला बनाए रखा और अच्छी तरह से हाइड्रेटेड रहने की कोशिश करता रहा और ऐंठन नियंत्रण में रही।

इस मैराथन को पूरा करने के लिए बहुत मेहनत, समर्पण और अनुशासन की आवश्यकता थी - इसमें सुबह जल्दी उठना और अलग-अलग मौसम की स्थिति का अनुभव करने के लिए अलग-अलग स्थानों पर अनगिनत अभ्यास सत्र और प्रशिक्षण शामिल थे। यह एक लंबी और चुनौतीपूर्ण यात्रा थी, लेकिन मुझे इसे सफलतापूर्वक पूरा करने पर गर्व है।

मैं इस जीत का श्रेय अपने कोच दीपक बुधरानी सर को देता हूँ, जो हर कदम पर मेरे साथ थे। मुझे प्रेरित करते रहे, मार्गदर्शन देते रहे और प्रोत्साहित करते रहे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने मुझे यह विश्वास दिलाया कि मैं यह मैराथन पूरी कर सकता हूँ। हम दोनों ने एक ही समय पर फिनिश लाइन पार की।

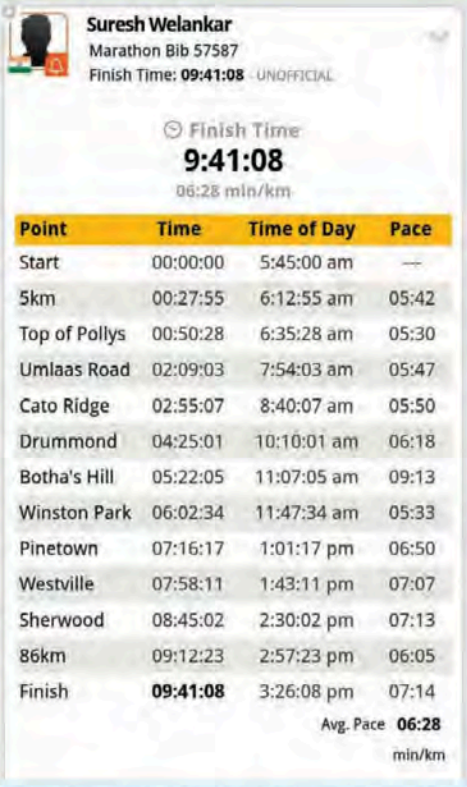

Suresh Welankar
Marathon Bib 57587
Finish Time: **09:41:08** - UNOFFICIAL

Finish Time
9:41:08
06:28 min/km

Point	Time	Time of Day	Pace
Start	00:00:00	5:45:00 am	---
5km	00:27:55	6:12:55 am	05:42
Top of Pollys	00:50:28	6:35:28 am	05:30
Umlaas Road	02:09:03	7:54:03 am	05:47
Cato Ridge	02:55:07	8:40:07 am	05:50
Drummond	04:25:01	10:10:01 am	06:18
Botha's Hill	05:22:05	11:07:05 am	09:13
Winston Park	06:02:34	11:47:34 am	05:33
Pinetown	07:16:17	1:01:17 pm	06:50
Westville	07:58:11	1:43:11 pm	07:07
Sherwood	08:45:02	2:30:02 pm	07:13
86km	09:12:23	2:57:23 pm	06:05
Finish	**09:41:08**	3:26:08 pm	07:14
		Avg. Pace	**06:28** min/km

मैं यह उपलब्धि अपने परिवार को भी समर्पित करता हूँ, जो हमेशा मेरे साथ खड़े रहे। दीपक देवरे सर मेरा निरंतर समर्थन करते हैं और उनके प्रोत्साहन के लिए मैं उनका विशेष धन्यवाद करता हूँ। मैं उन सभी का भी आभारी हूँ जिनके आशीर्वाद और शुभकामनाओं ने मुझे यह दौड़ जीतने में मदद की। मैं दीपक देवरे सर और मेरे सभी दोस्तों को देखकर अभिभूत था जो मुझे एयरपोर्ट पर लेने आए थे।

इस वर्ष के कॉमरेड्स मैराथन में भारत से कुल 414 धावकों ने भाग लिया। मुझे अपने आयु वर्ग में चौथा स्थान प्राप्त करने पर गर्व है।

इसके अलावा, मुझे कॉमरेड्स मैराथन के इतिहास में रॉबर्ट मिशेल मेडल जीतने वाला पहला शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्ति बनने का सम्मान मिला। इसने इस उपलब्धि को और भी उज्जवल बना दिया।

विभिन्न देशों के लोगों से मिलना एक अविश्वसनीय अनुभव था और इस दौरे ने मुझे जीवन के कई मूल्यवान सबक सिखाए... कई दोस्त बनाए। एक बार फिर, आप सभी को आपके प्यार, आशीर्वाद और अटूट समर्थन के लिए धन्यवाद।

अब मैं भविष्य में और अधिक मैराथन में भाग लेने के लिए उत्सुक हूँ - उसी तीव्रता, जुनून और मानसिकता के साथ।

राजभाषा प्रशिक्षण की चार सीढ़ियाँ: प्रबोध से पारंगत तक

श्री संदीप दुबे
हिंदी अनुवादक (राजभाषा)

राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन की आधारशिला

भारत एक बहुभाषी देश है जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं। इन सबके मध्य एकता और प्रशासनिक सुगमता बनाए रखने के लिए संविधान में एक सामान्य भाषा की आवश्यकता अनुभव की गई। इसी उद्देश्य से भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया। हिंदी को शासन और प्रशासन की भाषा बनाने के लिए केवल संवैधानिक घोषणा पर्याप्त नहीं थी; इसके लिए कर्मचारियों को सक्षम और दक्ष बनाना भी आवश्यक था ताकि वे अपने कार्यालयीन कार्य हिंदी में सुचारु रूप से कर सकें। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए भारत सरकार के गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) ने राजभाषा प्रशिक्षण योजना आरंभ की, जिसके अंतर्गत कर्मचारियों को चार स्तरों में हिंदी का क्रमिक प्रशिक्षण दिया जाता है-प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ और पारंगत।

इन चारों स्तरों का उद्देश्य कर्मचारियों को क्रमशः भाषा ज्ञान, प्रयोग, दक्षता और सृजनात्मकता के स्तर तक पहुँचाना है। यह प्रशिक्षण न केवल हिंदी को प्रशासनिक कार्यों की भाषा बनाता है, बल्कि भारत की भाषायी एकता और सांस्कृतिक समरसता को भी सुदृढ़ करता है।

राजभाषा प्रशिक्षण योजना का परिचय

राजभाषा प्रशिक्षण योजना भारत सरकार की एक महत्त्वपूर्ण नीति है, जिसके माध्यम से गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों के कर्मचारियों को हिंदी सिखाई जाती है तथा हिंदी भाषी क्षेत्रों के कर्मचारियों को राजभाषा नियमों, शब्दावली और अनुवाद से संबंधित दक्षता प्रदान की जाती है।

इस योजना का संचालन गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा किया जाता है। प्रशिक्षण का उद्देश्य है कि सरकारी कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़े, और सभी कर्मचारी अपने दैनंदिन कार्य - जैसे पत्र लेखन, नोटशीट तैयार करना, रिपोर्ट बनाना, तथा फाइल निपटान - हिंदी में सहजता से कर सकें।

राजभाषा प्रशिक्षण योजना केवल भाषा शिक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो भाषा को प्रशासन की आत्मा बनाती है।

प्रबोध स्तर - राजभाषा ज्ञान की प्रथम सीढ़ी

प्रबोध प्रशिक्षण हिंदी सीखने की पहली सीढ़ी है। यह उन कर्मचारियों के लिए अनिवार्य है जिन्हें हिंदी का प्रारंभिक ज्ञान नहीं है या जो गैर-हिंदी भाषी राज्यों से हैं। इस प्रशिक्षण में हिंदी वर्णमाला, मात्राएँ, उच्चारण, वाक्य निर्माण, सामान्य शब्दावली और दैनंदिन प्रयोग में आने वाले सरकारी शब्दों का अभ्यास कराया जाता है।

प्रबोध स्तर का लक्ष्य है कि प्रशिक्षार्थी हिंदी पढ़ने, लिखने और समझने में सक्षम हो जाए। इस प्रशिक्षण के अंतर्गत अभ्यास प्रश्न, डिक्टेशन, अनुवाद और पत्र लेखन के प्रारंभिक स्वरूप सिखाए जाते हैं।

प्रबोध परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात कर्मचारी सामान्य कार्यालयीन पत्र, आवेदन, नोटशीट आदि हिंदी में तैयार करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। यह स्तर राजभाषा प्रशिक्षण की नींव रखता है।

प्रवीण स्तर - दक्षता का विकास

प्रवीण स्तर प्रबोध के बाद का दूसरा चरण है। इस स्तर का उद्देश्य कर्मचारियों में हिंदी में कार्य करने की दक्षता और आत्मविश्वास विकसित करना है। इस प्रशिक्षण में हिंदी व्याकरण, वाक्य संरचना, शब्द भेद, वर्तनी नियम, सरकारी संज्ञा शब्दावली और राजभाषा नियम 1976 की जानकारी दी जाती है।

साथ ही, अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद का प्राथमिक अभ्यास भी कराया जाता है ताकि कर्मचारी दोनों भाषाओं के बीच अर्थ और शैली का संतुलन बनाए रखना सीख सके।

प्रवीण प्रशिक्षण प्राप्त करने वाला व्यक्ति हिंदी में न केवल नोटशीट या पत्र तैयार कर सकता है, बल्कि फाइल संबंधी टिप्पणियाँ, आदेश तथा कार्यालयीन ज्ञापन भी हिंदी में लिख सकता है। यह स्तर हिंदी में कार्य निष्पादन के व्यावहारिक पक्ष को सशक्त करता है।

प्राज्ञ स्तर -गहन अध्ययन और विशेषज्ञता

प्राज्ञ स्तर हिंदी प्रशिक्षण की तीसरी और उन्नत अवस्था है। यह प्रशिक्षण उन कर्मचारियों के लिए होता है जिन्होंने प्रबोध और प्रवीण स्तर पूरे कर लिए हों। इस स्तर में हिंदी के साहित्यिक, तकनीकी और प्रशासनिक प्रयोगों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

प्राज्ञ प्रशिक्षण के अंतर्गत निम्न विषयों का गहराई से अध्ययन कराया जाता है:

- राजभाषा नीति एवं संवैधानिक प्रावधान
- राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976
- अनुवाद की तकनीक एवं सिद्धांत
- सरकारी शब्दावली और उसकी मानकीकरण प्रक्रिया
- रिपोर्ट लेखन, नोट लेखन और विज्ञप्ति लेखन
- हिंदी में भाषण एवं आलेख निर्माण

इस प्रशिक्षण का उद्देश्य कर्मचारियों को हिंदी के गूढ़ प्रयोगों से परिचित कराना है ताकि वे न केवल हिंदी में काम कर सकें, बल्कि अन्य सहकर्मियों को भी हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित कर सकें। प्राज्ञ स्तर प्राप्त व्यक्ति विभागीय बैठकों, वार्षिक रिपोर्टों और राजभाषा लेखों के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

पारंगत स्तर - उत्कृष्टता की पराकाष्ठा

पारंगत स्तर हिंदी प्रशिक्षण का सर्वोच्च चरण है, जो हिंदी पूर्ण ज्ञान, दक्षता और सृजनात्मकता का प्रतीक है। यह स्तर उन कर्मचारियों के लिए है जो राजभाषा के क्षेत्र में मार्गदर्शक या प्रेरक की भूमिका निभाना चाहते हैं।

इस स्तर में जटिल और तकनीकी अनुवाद, सरकारी संज्ञा शब्दावली का सटीक प्रयोग, उन्नत व्याकरण, सृजनात्मक लेखन, भाषण निर्माण, तथा प्रशासनिक लेखन शैली का प्रशिक्षण दिया जाता है।

पारंगत व्यक्ति हिंदी में प्रशासनिक निर्णयों, योजनाओं, नीति दस्तावेजों, तथा वार्षिक रिपोर्टों की रूपरेखा तैयार करने में दक्ष होता है।

कई कार्यालयों में पारंगत कर्मचारी को राजभाषा अधिकारी के सहयोगी, अनुवाद सलाहकार या प्रशिक्षक के रूप में कार्य करने का अवसर भी मिलता है। यह स्तर हिंदी को केवल भाषा नहीं, बल्कि कार्यक्षमता और आत्मनिर्भरता का उपकरण बना देता है।

राजभाषा प्रशिक्षण योजना की प्रशासनिक भूमिका

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण निदेशालय (CHTD) इन प्रशिक्षणों का समन्वय करता है। निदेशालय के अंतर्गत देशभर में क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र कार्यरत हैं, जहाँ ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्रकार से प्रशिक्षण आयोजित किए जाते हैं।

प्रशिक्षण की संक्षिप्त जानकारी

पाठ्यक्रम का नाम	पात्रता
प्रबोध	जिनका हिंदी ज्ञान पाँचवी कक्षा के स्तर से कम है ऐसे सभी कर्मचारी/अधिकारी प्रबोध प्रशिक्षण के लिए पात्र हैं। तमिल, तेलुगू, कन्नड, मलयालम, मणिपुरी, मिझो, अंग्रेजी भाषा-भाषी प्रवेश ले सकते हैं।
प्रवीण	यह पाठ्यक्रम माध्यमिक स्तर का है। इसमें प्रबोध परीक्षा उत्तीर्ण तथा मराठी, गुजराती, मैथिली, संथाली, बोडो, डोगरी, नेपाली, बांग्ला, आसमिया, और उड़िया भाषा-भाषी अधिकारी/कर्मचारी जिन्हें कक्षा 7वी तक हिंदी का ज्ञान है, सीधे प्रवेश ले सकते हैं।
प्राज्ञ	यह उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए है, जो प्रवीण पास कर चुके हैं या जिनकी मात्रभाषा उर्दू, कश्मीरी, पंजाबी तथा पश्तो है और जिनका हिंदी का ज्ञान मैट्रिक या दसवीं कक्षा से कम है, प्रशिक्षण हेतु पात्र हैं।
पारंगत	कार्यालय ज्ञापन, फा.सं.12012/03/2015-राभा(नीति) दिनांक 22.04.2015 के अनुसार केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों तथा उनके संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों, केंद्र सरकार के स्वामित्व अथवा नियंत्रणाधीन सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/सांविधिक निकायों/ अभिकरणों/ निकायों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों के हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त सभी कार्मिक पारंगत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण हेतु पात्र होंगे।

सरकार ने यह भी सुनिश्चित किया है कि प्रत्येक मंत्रालय, विभाग और उपक्रम में कर्मचारियों का एक निश्चित प्रतिशत इन प्रशिक्षणों में सम्मिलित हो।

इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले कर्मचारियों को राजभाषा भत्ता तथा वार्षिक प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं, जिससे कर्मचारियों में हिंदी सीखने की प्रेरणा बनी रहती है।

राजभाषा नीति के क्रियान्वयन में प्रशिक्षण की भूमिका

राजभाषा प्रशिक्षण योजना केवल भाषाई प्रशिक्षण नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता और प्रशासनिक दक्षता का माध्यम है। इससे न केवल हिंदी के प्रयोग में वृद्धि होती है, बल्कि विभागों के बीच संवाद और कार्य निष्पादन में एकरूपता आती है।

राजभाषा नीति के अनुसार, हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में प्रशासनिक कार्य किए जा सकते हैं, परंतु हिंदी को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस नीति के प्रभावी क्रियान्वयन में प्रशिक्षण प्राप्त कर्मचारियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

राजभाषा प्रशिक्षण के चारों स्तर - प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, और पारंगत- केवल भाषा ज्ञान की सीढ़ियाँ नहीं, बल्कि भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था की आत्मा हैं। इनके माध्यम से हिंदी को न केवल सरकारी कामकाज की भाषा बनाया जा रहा है, बल्कि यह राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता, आत्मनिर्भरता और पहचान का प्रतीक भी बन गई है।

राजभाषा प्रशिक्षण योजना यह संदेश देती है कि हिंदी केवल बोलने या लिखने की भाषा नहीं, बल्कि शासन-प्रशासन में दक्षता, पारदर्शिता और आत्मीयता का माध्यम है।

जब प्रत्येक कर्मचारी हिंदी में आत्मविश्वासपूर्वक कार्य करेगा, तभी राजभाषा नीति का सच्चा उद्देश्य - "हिंदी में कार्य करना, हिंदी में सोचना और हिंदी में निर्णय लेना" - पूर्ण रूप से साकार होगा।

जीवन कितना बदल गया है।

श्री आसिफ़ इकबाल कुरेशी
महाप्रबंधक (बाह्यस्त्रोत)

इंसान की अभिलाषा बदली,
रिश्तों ने परिभाषा बदली,
संसार हाथ से निकल गया है,
जीवन कितना बदल गया है।

प्रतिस्पर्धा के इस दौर में,
संघर्ष के नित नए ज़ोर में,
बचपन कहीं फिसल गया है,
जीवन कितना बदल गया है।

मानवता की मूरत बदली,
बदहाली ने सूरत बदली,
पैसा सबको निगल गया है,
जीवन कितना बदल गया है।

ज़िंदगी गुजरे थोड़ी राहत में,
कुछ कर जाने की चाहत में,
रंग रूप भी ढल गया है,
जीवन कितना बदल गया है।

डिजिटल का अब शोर है,
कागज़ हुआ कमजोर है,
एआई जैसे खल गया है,
जीवन कितना बदल गया है।

निराशा का कैसा ही दौर हो,
बादल भले ही घनघोर हो,
आशा का दीपक जल गया है,
जीवन कितना बदल गया है।

हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के संदर्भ में 'वाक् से पाठ' तंत्र

श्री रितु राज सिंह
उप प्रबंधक (तकनीकी सेवाएं)

तकनीक मानव-बुद्धि का सर्वाधिक विकसित रूप है। वर्तमान सूचना एवं संचार के युग में तकनीक के विकास ने सराहनीय ऊँचाईओं को छुआ है। तकनीक के माध्यम से टंकण तथा अनुवाद हेतु अनेक सॉफ्टवेयर सृजित किये जा चुके हैं, जिनमें 'वाक् से पाठ' एक अप्रतिम उपलब्धि है। प्रस्तुत लेख में भारतीय भाषाओं के संदर्भ में 'वाक् से पाठ' तंत्र के नवीनतम उपकरणों के प्रयोग तथा व्याख्यान का प्रयास है। अतः 'वाक् से पाठ'- तंत्र का यह लेख भारतीय भाषाओं के उन्नत तकनीकी प्रस्तुतीकरण में लघु सहयोग की चेष्टा है।

'वाक् से पाठ' (speech to text) एक वाक् पहचान सॉफ्टवेयर है, जो संगणकीय भाषाविज्ञान के माध्यम से बोली जाने वाली भाषा की पहचान एवं अनुवाद को पाठ में रूपांतरित करता है। इसे आम भाषा में 'स्पीच टू टेक्स्ट' के रूप में जाना जाता है। प्रौद्योगिकी के सभी उन्नत रूपों की तरह, 'वाक् से पाठ' हमें दैनिक प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने तथा कम समय में अधिक कार्य करने हेतु सहायता करता है। इससे संबंधित विशिष्ट एप्लिकेशन, टूल और डिवाइस, पाठ प्रदर्शित करने तथा उस पर कार्य करने के लिए वास्तविक समय के वाक् व्यवहार को लिप्यंतरित कर सकते हैं। उनका पहला वास्तविक उपयोग नेत्रहीनों के लिए पठनप्रणालियों में था, जहाँ एक प्रणाली एक पुस्तक से कुछ पाठ पढ़ती थी और इसे भाषण में परिवर्तित करती थी। बेशक ये शुरुआती प्रणालियाँ बहुत यांत्रिक लग रही थीं, परंतु नेत्रहीनों द्वारा उन्हें अपनाना शायद ही आश्चर्यजनक था, क्योंकि ब्रेल पढ़ने या वास्तविक व्यक्ति को पढ़ने के अन्य विकल्प अक्सर उपलब्ध नहीं थे। वर्तमान में अनेक परिष्कृत प्रणालियाँ मौजूद हैं, जो नेत्रहीनों के लिए मानव कंप्यूटर संपर्क की सुविधा प्रदान करती हैं। परंतु जैसे-जैसे मशीनी तंत्र का विस्तार होता है, वैसे-वैसे उसका व्यावहारिक क्षेत्र भी विस्तृत होता है। आज चाहे सोशल मीडिया हो या जनसंचार, प्रशासकीय कार्य हो या दैनिक कार्य, सामान्य भाषा-व्यवहार हो या अनुवाद, सभी में 'पाठ से वाक् तथा 'वाक् से पाठ' का तंत्र अपनी अनुप्रयोगिता के कीर्तिमान स्थापित कर रहे है।

भारत जैसे भाषाई वैविध्य युक्त देश में इस प्रकार का तंत्र किसी वरदान से कम नहीं है, जहाँ व्यवहृत भाषाएँ प्राचीन होने के साथ-साथ काफ़ी वैज्ञानिक भी हैं। 'टेक्स्ट-टू-स्पीच' सेवाएँ पाठ को मानव समान संश्लेषित भाषण में परिवर्तित करने में सक्षम बनाती हैं, जिसे सेवा या ब्रांड के अनुरूप

अनुकूलित किया जा सकता है। भारत के संदर्भ में यदि 'वाक् से पाठ' तंत्र की व्यापकता का मूल्यांकन किया जाए, तो वर्तमान में अनेक ऐसे ऐप, वेबसाइटें और पोर्टल हैं, जो हिंदी, असमिया, बंगाली, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मराठी, नेपाली, ओडिया, पंजाबी, तमिल, तेलुगु सहित भारत की व्यापक रूप में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में अनुवाद, ट्रांसक्रिप्शन और लिप्यंतरण सेवाओं का लाभ उठाते हैं। भारत सरकार तथा अन्य गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा बड़े पैमाने पर इस तंत्र का प्रायोजन ही इसकी विस्तृत प्रयुक्तिपरकता का साक्ष्य है।

भारत सरकार द्वारा प्रायोजित 'वाक् से पाठ' तंत्र

भारत सरकार के विविध मंत्रालय तथा सम्बद्ध संस्थाएँ विस्तृत परिप्रेक्ष्य में इस तंत्र का प्रायोजन करते हैं। कुछ पर विस्तार से चर्चा करना अपेक्षित है :

श्रुतलेखन-राजभाषा

श्रुतलेखन-राजभाषा, वाक् प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक मील का पत्थर है, जो एक मशीन को मानवीय वाक्य को पहचानने और हिंदी यूनिकोड में एक आउटपुट प्रदान करने में सक्षम बनाती है। यह परियोजना एप्लाइड एआई ग्रुप, सी-डैक, पुणे द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के लिए विकसित की गई है। मन्त्र-राजभाषा (मशीन असिस्टेड ट्रांसलेशन) प्रणाली में अनुदित हिंदी पाठ को शुद्ध करने के लिए श्रुतलेखन-राजभाषा का प्रयोग एक उपकरण के रूप में किया जाता है। पहचानकर्ता व्याकरण (भाषा मॉड्यूल) के उपयोग के माध्यम से मान्यता में सुधार करता है, जो शब्दावली और वाक्य-रचना को परिभाषित करता है।

इस प्रणाली की मुख्य विशेषताओं में यूनिकोड पाठ को ISFOC फ़ॉण्ट में बदलने के लिए एक सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत फ़ॉन्ट सुविधा, यूनिकोड हिंदी टाइपिंग सहायता, अनडू, रीडू, कट, कॉपी, पेस्ट, सेलेक्ट ऑल, फाइंड एंड रिप्लेस की सुविधा, विराम चिह्न, दिनांक, संख्या और मुद्रा स्वरूप प्रदर्शित करने वाला सूचक, पाठ सुधार सुविधा, द्विभाषी टाइपिंग और संपादन सुविधा, इंस्क्रिप्ट, रेमिंगटन और फ़ोनेटिक कीबोर्ड के माध्यम से टाइप करने की सुविधायें एमएस वर्ड, एमएस एक्सेल, एमएस पेंट और नोटपैड के लिए फ्लोटिंग टूलबार दिया गया है। साथ ही, उपयोगकर्ता को अपनी संग्रहीत ऑडियो तरंग फ़ाइल को हिंदी टेक्स्ट में लिप्यंतरित करने के लिए ऑफ़ लाइन वेब ऑडियो वेब फ़ाइल इनपुट सुविधा भी शामिल की गई है।

भाषिणी

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के द्वारा TDIL (भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास) का महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। जिसके प्रमुख उद्देश्य, भाषा अवरोध के बिना मानव मशीन संपर्क को सुविधाजनक बनाना और सभी 22 आधिकारिक भारतीय भाषाओं के लिए सॉफ्टवेयर उपकरणों और एप्लिकेशनों को विकसित करना और बढ़ावा देना शामिल है। मिशन भाषिणी' का उद्देश्य सभी भारतीयों को उनकी अपनी भाषाओं में इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं तक आसान पहुँच प्रदान करना और भारतीय भाषाओं में सामग्री को बढ़ाना है जिससे आत्मनिर्भर भारत में डिजिटल समावेशन और डिजिटल सशक्तिकरण सुनिश्चित हो सके।

मिशन का उद्देश्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) का उपयोग करके विभिन्न भारतीय भाषाओं और अंग्रेज़ी में अनुवाद की सुविधा के लिए एक आसान और उत्तरदायी पारिस्थितिकी तंत्र को सक्षम करने के लिए एक सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म विकसित करना है।

AI4BHARAT(Artificial intelligence for Bharat)

'AI4BHARAT' आईआईटी मद्रास द्वारा भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी के विकास की एक अन्यतम उपलब्धि है, जो एक नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को सक्षम करके भारतीय भाषाओं के लिए एआई (AI) प्रौद्योगिकियों में अंग्रेज़ी के संबंध में समानता लाने के उद्देश्य से बनाई गई है। प्राथमिक प्रायोजक के रूप में, नंदन नीलेकणि ने 'AI4Bharat' में नीलेकणि केंद्र के गठन में उदारतापूर्वक योगदान दिया है, जिसमें सार्वजनिक भलाई के रूप में ओपन सोर्स भाषा तकनीक पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसके साथ ही माइक्रोसॉफ़्ट तथा मोजमच फाउंडेशन इसके प्रमुख प्रायोजकों में शुमार हैं।

'AI4Bharat' का कई भारतीय भाषाओं में अत्याधुनिक वाक् पहचान बनाने और यह सुनिश्चित करने पर गहरा ध्यान है जिससे कि मॉडल मोबाइल उपकरणों पर तैनात किए जा सकें, जिनमें मुख्य रूप से निम्नांकित उपकरणों की विशेष चर्चा अपेक्षित है-

ध्वनि

ध्वनि एक बिना लेबल वाला एएसआर कॉर्पस है, जिसे यूट्यूब और न्यूज ऑन एआईआर समाचार बुलेटिन से प्राप्त किया गया है। डेटासेट में 40 भारतीय भाषाओं में अपरिष्कृत ऑडियो हैं, जिनमें सभी ऑडियो फ़ाइलें अलग-अलग फ़ोल्डरों में व्यवस्थित की गई हैं। Youtube के लिए ऑडियो फ़ाइल नामों को Youtube-id नाम दिया गया है और न्यूज़ोनएयर के लिए, क्षेत्र के नाम का संयोजन, बुलेटिन का समय फ़ाइल नाम बनाता है, जिससे एक बुलेटिन को अन्य सभी भाषाओं में सुना जा सकता है।

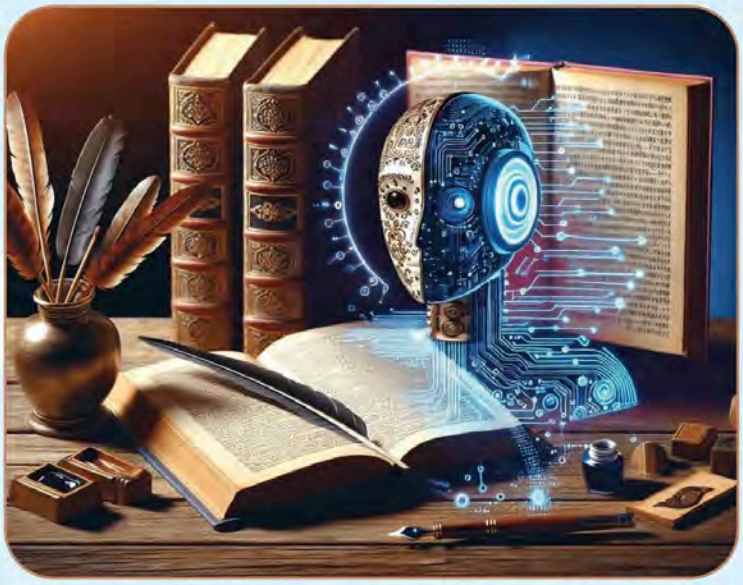

IndicWav2Vec

IndicWav2Vec40 भारतीय भाषाओं पर पहले से प्रशिक्षित एक बहुभाषी वाक् मॉडल है। यह मॉडल बहुभाषी भाषण मॉडल के रूप में भारतीय भाषाओं की सबसे बड़ी विविधता का प्रतिनिधित्व करता है। इस में 9 भाषाओं के लिए डाउनस्ट्रीम तथा ASR के लिए इस मॉडल को फाइन-ट्यून करते हैं और MUCS, MSR और OpenSLR नाम के 3 सार्वजनिक बेंचमार्क पर अत्याधुनिक परिणाम प्राप्त करते हैं। यह उपकरण विभिन्न भारतीय भाषाओं के 'वाक् से पाठ' तंत्र को अलग-अलग डाउनलोड करने की व्यवस्थित सुविधा प्रदान करता है।

श्रुतिलिपि

श्रुतिलिपि 12 भारतीय भाषाओं - बंगाली, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, ओडिया, पंजाबी, संस्कृत, तमिल, तेलुगु के लिए ऑल इंडिया रेडियो समाचार बुलेटिन से दस्तावेज़ पैमाने पर समानांतर ऑडियो द्वारा प्राप्त एक लेबल ए.एस.आर. तंत्र है। कॉर्पस में सभी भाषाओं में 6400 घंटे से अधिक का डेटा है। कंपनी 12 भाषाओं में 21 मानव मूल्यांकनकर्ताओं के साथ श्रुतिलिपि की गुणवत्ता तथा प्रतिनिधित्व क्षेत्रों, वक्ताओं और उल्लेखित संस्थाओं के संदर्भ में श्रुतिलिपि की विविधता भी स्थापित करती है।

IndicSUPERB

IndicSUPERB इस वाक् तंत्र की एक महत्त्वपूर्ण शाखा है, जिसमें 12 भारतीय भाषाओं में, 6 स्पीच लैंग्वेज़ अंडरस्टैंडिंग (SLU) टास्क शामिल हैं। कार्यों में स्वचालित वाक् पहचान, स्वचालित वक्ता सत्यापन एवं उदाहरण द्वारा प्रश्न और कीवर्ड स्पॉटिंग शामिल हैं। IndicSUPERB में कथबाथ डेटासेट भी शामिल है, जिसमें 12 भारतीय भाषाओं में 1684 घंटे का लेबल किया गया वाक्डेटा है।

इस प्रकार IndicSUPERB में विभिन्न परीक्षण स्थितियाँ :

i. मौजूदा मॉडलों की अज्ञात वक्ताओं के लिए सामान्यीकरण करने की क्षमता
ii. शोर के लिए मौजूदा मॉडलों की मजबूती और
iii. मौजूदा मॉडलों की मज़बूती का मूल्यांकन करने के लिए उपयोगी है।

उपरोक्त वाक् तंत्र उपकरणों के अलावा AI4Bharat द्वारा दो और नए उपकरणों का कार्य जारी है, जिन्हें शीघ्र ही On - Device ASR तथा चित्रलेखा नाम से प्रमोचित किया जाना प्रस्तावित है।

गैर-सरकारी तथा अन्य सम्बद्ध उपकरण

भारत में "वाक् से पाठ' तंत्र' पर जितना कार्य सरकारी स्तर पर हुआ है, उससे भी अधिक गैर-सरकारी स्तर पर किया गया है। भारत के कई बड़े फर्म तथा कंपनियाँ इस कार्य में संलग्न हैं, जिनका अध्ययन अपेक्षित है।

गूगल-स्पीच टू टेक्स्ट

गूगल-स्पीच टू टेक्स्ट, एंड्रॉयड तथा विंडोज़ ऑपरेटिंग

सिस्टम के लिए गूगल द्वारा विकसित एक स्क्रीन रीडर अनुप्रयोग है। यह एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर को स्क्रीन पर पाठ को पढ़ने तथा बोलने का अधिकार देता है। 'वाक् से पाठ' परिवर्तन हेतु गूगल का यह उपकरण अपने सरल तथा त्वरित कार्यप्रणाली के कारण वैश्विक स्तर पर उपयोगकर्ताओं की पहली पसंद है। साथ ही, यह मोबाइल ऐप के रूप में भी बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाने वाला उपकरण है।

eSPEAK

eSPEAK एक फ्री और ओपन सोर्स, क्रॉस-प्लेटफॉर्म, कॉम्पैक्ट, सॉफ्टवेयर स्पीच सिंथेसाइज़र है। यह एक फ़ॉर्मेंट सिंथेसिस विधि का उपयोग करता है, जो अपेक्षाकृत छोटे फ़ाइल आकार में कई भाषाएँ प्रदान करता है। मूल रूप से 2006 में जोनाथन डी की संकल्पना तथा रीके. डी द्वारा डेवेलप किया गया यह सॉफ्टवेयर अपनी निरन्तरता के कारण ही पहले अंग्रेज़ी तथा विश्व की अन्य भाषाओं के लिए लिनक्स और विंडोज के लिए एक कॉम्पैक्ट ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर स्पीच सिंथेसाइज़र है। एक 'फॉर्मेंट सिंथेसिस' विधि का उपयोग करता है। यह कई भाषाओं को छोटे आकार में प्रदान करने की अनुमति देता है। इसके साथ ही यह फ़ोनेम कोड में टेक्स्ट का अनुवाद कर सकता है, इसलिए इसे दूसरे स्पीच सिंथेसिस इंजन के फ्रंट एंड के रूप में अनुकूलित किया जा सकता है तथा अन्य भाषाओं के लिए संभावना ढूंढने हेतु भिन्न भाषाओं के देशी वक्ताओं की सहायता का स्वागत करता है।

VSpeech-AI

VSpeech-AI भारत में स्थित एक अनूठा स्टार्टअप है, जिसका उद्देश्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सक्षम सेवाओं और उत्पादों जैसे 'टेक्स्ट टू स्पीच' और 'स्पीच टू टेक्स्ट' जनरेटर की एक विस्तृत श्रृंखला बनाना है। भारतीय टीटीएस (अहमदाबाद) द्वारा प्रायोजित यह तंत्र 'पाठ से वाक्' तथा 'वाक् से पाठ', अनुवाद के लिए उपयुक्त तकनीक प्रयोग हिंदी, मलयालम, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, ओडिया और पंजाब जैसी कई भारतीय भाषाओं के लिए संभावित वाक् पहचान समाधान प्रदान करते हैं। इसे विशेष रूप से आभासी संचार के लिए सकारात्मक उपयोगकर्ता बातचीत सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

Speakatoo

Speakatoo हिंदी भाषा के लिए एक अग्रणी और लोकप्रिय AI आधारित टेक्स्ट टू स्पीच ट्रांसफॉर्मेशन, वेब आधारित एप्लिकेशन है। यह टूल अपने प्रयोगीय उपलब्धता के लिए जाना जाता है। चाहे कोई तकनीकी विशेषज्ञ हों या एक शिक्षार्थी, टूल को इस तरह से डिज़ाइन किया गया है कि यह किसी भी टेक्स्ट को 120 से अधिक भाषाओं और 700 से अधिक आवाज़ों में आसानी से मानव आवाज़ में बदल देता है और आवाज़ को पाठ में। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं से जुड़ा यह तंत्र आर्टिफिशिल इन्टेलिजेन्स की दिशा में एक मज़बूत प्रयास है।

उपरोक्त विवेचित उपकरणों के अलावा भी भारत में गैरसरकारी स्तर पर अनेक प्रकार के 'वाक् से पाठ' उपकरण मौजूद हैं, जिनमें indiatyping.com, ibm स्पीच टू टेक्स्ट, azure (माइक्रोसॉफ्ट) आदि प्रमुख हैं। गैर-सरकारी तौर पर, इन ए-आई उपकरणों पर कार्य किए जाने की दिशा में जो निरंतर वृद्धि हो रही है, उसका प्रमुख कारण है: प्रयोगकर्ताओं के बीच निरंतर इनकी बढ़ती प्रसिद्धि। इंटरनेट के इस युग में इन तकनीकों का विकास भारत को तकनीक के सेवा क्षेत्र का सबसे बड़ा प्रदाता सिद्ध कर सकता है।

निष्कर्ष

वस्तुतः 'पाठ से वाक्' तंत्र का हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में विकास, भारत में आर्टिफिशिल इन्टेलिजेन्स की अन्यतम उपलब्धि है। व्यावहारिक तौर पर यदि विचार करें, तो हम यह पाते हैं कि जिस प्रकार से सरकारी तथा गैर-सरकारी स्तर पर यह तंत्र निरंतर विकसित हो रही, उसी अनुपात में उसका प्रयोग उतना व्यावहारिक नहीं हो रहा है। उपकरणों (tools) के निर्माण, उनमें व्याप्त तकनीक तथा लागत में कमी न होते हुए भी आम जन तक उनकी पहुँच की सुलभता में एक अंतराल है, जिसका प्रमुख कारण सीधे तौर पर प्रचार तथा जानकारी का अभाव जान पड़ता है। एक आम व्यक्ति स्पीच को टाइप करने के लिए गूगल से आगे जानकारी नहीं रखता है, जिस कारण बाकी सभी उपकरण उसकी जानकारी की परिपाटी से बाहर है।

अतः 'पाठ से वाक् तंत्र' भारत में तकनीकी विकास का नया दौर है, जो अभी युवा काल में है। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएँ, जिस प्रकार तकनीकी तंत्र के कदम-से-कदम मिला रही हैं, निश्चित ही यह प्रौढ़ावस्था में भारत का वैश्विक पटल पर प्रतिनिधित्व करने का सामर्थ्य रखती हैं।

कर्म का सिद्धांत

श्री घनश्याम सी प्रजापती
प्रबंधक (पूर्व खंड – योजना)

कर्म का सिद्धांत, जिसे कर्म-फल का सिद्धांत भी कहा जाता है, एक ऐसा विचार है जो बताता है कि प्रत्येक क्रिया का एक समान और विपरीत प्रतिक्रिया होती है। इसका मतलब है कि आपके कार्यों का परिणाम आपके भविष्य को निर्धारित करता है, अच्छे कार्यों से अच्छे परिणाम और बुरे कार्यों से बुरे परिणाम मिलते हैं।

कर्म के सिद्धांत का सार :

1. कारण और प्रभाव : कर्म का सिद्धांत एक कारण और प्रभाव का नियम है। यह बताता है कि हर क्रिया का परिणाम होता है और आपके कार्यों का परिणाम आपके जीवन को प्रभावित करता है।

2. नैतिक नियम : यह एक नैतिक नियम है जो अच्छे और बुरे कार्यों के बीच अंतर करता हैं और उनके परिणामों को स्पष्ट करता है। अच्छे कार्यों से सुखद परिणाम और बुरे कार्यों से दुखद परिणाम मिलते है।

3. पुनर्जन्म : कर्म का सिद्धांत अक्सर पुनर्जन्म के साथ जुड़ा होता हैं, जहां कर्मों का फल अगले जन्म में भी मिलता है।

4. मुक्ति : यह सिद्धांत मोक्ष या मुक्ति के विचार से भी जुड़ा है, जहां कर्मों से छुटकारा पाने से आत्मा को बंधन से मुक्ति मिलती है।

कर्म के प्रकार

1. संचित कर्म : ये पिछले जन्मों के कर्म हैं जो अभी भी फल देने के लिए तैयार हैं।

2. प्रारंभ कर्म : ये कर्मों का वह हिस्सा है जो इस जीवन में फल दे रहा है।

3. क्रियमान कर्म : ये वे कर्म है जो आप वर्तमान में कर रहे हैं।

4. आगामी कर्म : ये वे कर्म है जो आप भविष्य में करेंगे।

कर्म का सिद्धांत विभिन्न धर्मों और दर्शनों में :

1. हिंदू धर्म : कर्म का सिद्धांत हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हिंदू कर्म के सिद्धांत का कारण और प्रभाव का एक नैतिक नियम मानते हैं।

2. बौद्ध धर्म : बौद्ध धर्म में भी कर्म का सिद्धांत महत्वपूर्ण है। बौद्ध धर्म में कर्म के सिद्धांत को कार्य कारण के नियम के रूप में देखते हैं जो पुनर्जन्म और निर्वाण के साथ जुड़ा हुआ है।

3. जैन धर्म : जैन धर्म में कर्म का सिद्धांत आत्मा और कर्म के बीच संबंध को दर्शाती है। जैन कर्म के सिद्धांत को आत्मा के बंधन और मुक्ति के साथ जोड़ते हैं।

निष्कर्ष

कर्म का सिद्धांत एक जटिल अवधारणा है जो विभिन्न धर्मों और दर्शनों में अलग-अलग तरीकों से समझी जानी है। यह एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है जो जीवन के अर्थ, कर्मों के परिणामों और मुक्ति के विचार को समझने में मदद करता है।

कहानी: भविष्य का कारखाना

श्री सुनील कुशवाहा
मुख्य प्रबंधक (सामग्री क्रय)

एक छोटे शहर में, जहाँ पुरानी मिलें अपनी चमक खो रही थीं, वहाँ एक युवा इंजीनियर, सुनील, अपने दादाजी के पुराने कारखाने को फिर से जीवंत करने का सपना देखता था। यह कारखाना कभी शहर की शान हुआ करता था, लेकिन अब यह धीमी गति से चलता रहा था और लगातार नुकसान में था। सुनील को पता था कि इसे बदलने का एकमात्र तरीका पारंपरिक उद्योगों को डिजिटल तकनीकों के माध्यम से स्मार्ट और स्वचालित बनाना होगा। इस प्रकार से उत्पादन प्रक्रिया को अधिक कुशल, लचीला और सटीक बनाया जा सके। इससे समय, लागत और संसाधनों की बचत होगी। अतः इंडस्ट्री 4.0 की अवधारणा को अपनाने की जरूरत है।

सुनील ने अपनी योजना, दादाजी को बताई। "sदादाजी, हमें अपने कारखाने को स्मार्ट बनाना होगा। हमें सेंसर, डेटा विश्लेषण और रोबोटिक्स का उपयोग करना होगा।" दादाजी, जो पारंपरिक तरीकों में विश्वास रखते थे, थोड़ा झिझके।

सुनील ने उन्हें समझाया, "सोचिए दादाजी, हमारी मशीनें एक-दूसरे से बात कर सकेंगी। वे हमें बताएंगी कि उन्हें कब मरम्मत की ज़रूरत है, या कौन-सा पुर्जा बदलने की ज़रूरत है।"

सुनील ने सबसे पहले कारखाने में स्मार्ट सेंसर लगाए। ये सेंसर मशीनों के प्रदर्शन, तापमान और कंपन पर लगातार डेटा इकट्ठा करते थे। कुछ ही हफ्तों में, सुनील और उनकी टीम को मशीनों के बारे में ऐसी जानकारी मिलने लगी जो उन्होंने पहले कभी नहीं सोची थी।

एक दिन, एक मशीन में खराबी आने वाली थी। सेंसर ने असामान्य कंपन का पता लगाया और तुरंत सुनील के सिस्टम को अलर्ट भेजा। सुनील ने तुरंत टीम को मरम्मत के लिए भेजा और एक बड़ी खराबी को टाल दिया, जिससे उत्पादन का समय और पैसा दोनों बच गए। दादाजी ने यह देखकर सिर हिलाया - यह सचमुच कमाल था।

अगले चरण में, सुनील ने कुछ रोबोटिक्स और ऑटोमेशन को कारखाने में एकीकृत किया।

इससे भारी और दोहराव वाले काम बहुत तेजी से और सटीकता से होने लगे। मजदूरों को अब अधिक रचनात्मक और जटिल कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर मिला,

जिससे उनकी संतुष्टि भी बढ़ी।

धीरे-धीरे, कारखाने में सब कुछ आपस में जुड़ गया। उत्पादन प्रक्रियाएँ अधिक कुशल हो गईं, ऊर्जा की खपत कम हो गई, और उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार हुआ। ग्राहक खुश थे और नए ऑर्डर आने लगे।

एक शाम, दादाजी ने सुनील के कंधे पर हाथ रखा। "बेटा, तुमने इस पुराने कारखाने को नया जीवन दिया है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि तकनीक इतनी शक्तिशाली हो सकती है।"

सुनील मुस्कुराया। "यह सिर्फ तकनीक ही नहीं है, दादाजी। यह भविष्य है। इंडस्ट्री 4.0 से सिर्फ मशीनों को स्मार्ट बनाना ही नहीं है; यह लोगों को सशक्त बनाता है, उनको दक्ष बनाता है और एक टिकाऊ भविष्य की ओर ले जाता है। यह हमें प्रतिस्पर्धा में आगे रखता है और हमें बेहतर उत्पादों के साथ ग्राहकों की सेवा करने में मदद करता है।"

शहर के अन्य कारखानों ने भी सुनील के कारखाने की सफलता को देखा और प्रेरित हुए। उन्होंने भी उद्योग 4.0 को अपनाना शुरू कर दिया, जिससे पूरे शहर में आर्थिक विकास और समृद्धि आई। सुनील ने न केवल अपने दादाजी के सपने को पूरा किया, बल्कि पूरे शहर के लिए एक नए, उज्जवल भविष्य की नींव भी रखी। इंडस्ट्री 4.0 ने साबित कर दिया कि नवाचार और अनुकूलन ही आगे बढ़ने का रास्ता है। इंडस्ट्री 4.0 की थीम " स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग " है, जिसमें Internet of Things (IoT), Artificial Intelligence (AI), Big Data, Robotics, और Cloud Computing जैसी तकनीकों का उपयोग कर एक जुड़ा हुआ, स्वचालित और बुद्धिमान औद्योगिक तंत्र तैयार किया जाता है।

इंडस्ट्री 4.0 विनिर्माण (Manufacturing) क्षेत्र के लिए एक तकनीकी क्रांति साबित हो रही है, जिसने उत्पादन प्रणाली

को स्मार्ट, तेज और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाया है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), रोबोटिक्स, क्लाउड कंप्यूटिंग और डेटा एनालिटिक्स जैसी तकनीकों के समन्वय से पारंपरिक उद्योग अब डिजिटल और स्वचालित रूप में बदल रहे हैं।

इन तकनीकों के उपयोग से उत्पादन की गति और दक्षता में बढ़ोतरी होती है, साथ ही त्रुटियों में कमी आने से गुणवत्ता भी बेहतर होती है। पूर्व अनुमानित रखरखाव (Predictive Maintenance) की मदद से मशीनों की खराबी पहले ही पता चल जाती है, जिससे डाउनटाइम कम होता है और लागत में बचत होती है। इसके अलावा, स्मार्ट सप्लाई चेन से सामग्री उपलब्धता, परिवहन और डिमांड अनुमान में सहजता आती है।

इंडस्ट्री 4.0 न केवल संचालन को अनुकूल बनाती है बल्कि कर्मचारियों के लिए सुरक्षित कार्य वातावरण भी तैयार करती है। खतरनाक और दोहराव वाले कार्यों में रोबोटिक्स के उपयोग से जोखिम कम होता है और उत्पादन निरंतर चलता रहता है। साथ ही, डेटा-आधारित निर्णय लेने से कंपनियाँ ग्राहकों की जरूरतों को और बेहतर तरीके से पूरा कर पाती हैं।

ऊर्जा प्रबंधन और संसाधनों का प्रभावी उपयोग सतत विकास की दिशा में एक नया कदम है। कुल मिलाकर, इंडस्ट्री 4.0 विनिर्माण कंपनियों को भविष्य की चुनौतियों से निपटने, वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने और अधिक लाभदायक बनने की दिशा में मार्गदर्शक भूमिका निभा रही है।

अतः विनिर्माण क्षेत्र में इंडस्ट्री 4.0 को अपनाना समय की माँग है, ताकि कंपनियाँ तकनीकी उन्नति, उत्पादकता, गुणवत्ता और नवाचार में निरंतर प्रगति करते हुए उद्योग जगत में अपना मजबूत स्थान बनाए रख सकें।

ग्लोबल युग में हिंदी की स्थिति एवं भूमिका

श्री रामकृष्ण दायमा
वरिष्ठ अभियंता (तकनीकी सेवाएं)

"हिंदी हमारी जान है, भारत माता की शान है, इसके सम्मान से, बढ़े हमारा मान है।"

प्रस्तावना :

हिंदी शब्द मानस पटल पर अंकित होते ही शरीर में जो उत्साह और सम्मान की तरंगे उठने लगती है, वह प्रत्येक हिंदी भाषी मनस्वी के लिये एक अलग ही गरिमापूर्ण अनुभूति है।

आज हिंदी भारतवर्ष की ही भाषा नहीं, अपितु यह एक अंतर्राष्ट्रीय समाज और मानवीय समरसता का सम्प्रेषण करने वाली एक महत्वपूर्ण भाषा है।

भाषा संबंधी सर्वाधिक विश्वस्त पुस्तक "ऐथेनेलॉग" के एक संस्करण के अनुसार विश्व में लगभग 6712 भाषाये बोली जाती है। समय के साथ न चलने वाली भाषाये अपने मूलरूप को खोकर अस्तित्वहीन हो जाती है, तो कुछ नई भाषाओं के साथ उभरकर आ जाती है, किंतु अपनी समृद्ध शब्द परंपरा सुगमता और नत्यतर वैज्ञानिक उपकरणों के कारण हिंदी अपने वैश्विक गौरव को बढ़ाये जा रही है।

हिंदी का ग्लोबल परिदृश्य:-

विश्व के 160 देशों में हिंदी देशी-विदेशी लोगों के बीच भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति अपनत्व को जगा रही है।

14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने, संविधान के भाग-17 के अध्याय की धारा 343 (1) के अनुसार यह घोषणा की, कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। उस समय विश्व में भाषाओं की प्रायोक्ताओं की संख्या के आधार पर हिंदी पांचवे स्थान पर थी, 1980 के समय तक आते-आते हिंदी भाषा के प्रायोक्ताओं की संख्या में तीव्रतर वृद्धि हुई और हिंदी, चीनी और अंग्रेजी के पश्चात तीसरे स्थान पर है।

डॉ करुणाशंकर जी के अनुसार सन् 1999 में "मशीन ट्रांसलेशन समिट" अर्थात यांत्रिक अनुवाद संगोष्ठी" में टोक्यो

विश्वविद्यालय के प्रो. हाजिमा तनाका ने भाषाई, ग्रे आकड़ा पेश किया कि विश्वभर में चीनी और अंग्रेजी भाषा बोलने वालों के बाद हिंदी तीसरे स्थान पर है।

"आधुनिक युग में हिंदी हमारी राष्ट्रीय पहचान बन गई है। राजाराम मोहन राय, केशवचंद्र सेन, महात्मा गांधी, काका कालेलकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आदि महापुरुष एवं विभिन्न संस्थानों ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिये कई महत्वपूर्ण कार्य किये।

आज के युग में हिंदी, ग्लोबल युग में एक चमकता सितारा है जो दिन-प्रतिदिन अपनी पहचान, विश्व में अग्रसर कर रहा है।

हिंदी भाषा के वैश्वीकरण में सरकार का सहयोग :

हिंदी प्रवासी साहित्य के द्वारा वैश्वीकरण प्राप्त करने हेतु सरकारी सहयोग अत्यंत आवश्यक है, इसके प्रचार हेतु वर्तमान सरकार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा भी विदेशों में अपने भाषण में हिंदी भाषा का उपयोग सुगमतापूर्वक करके हिन्दी भाषा का गौरव बढ़ाया है। यही सहयोग राजभाषा को ग्लोबल रूप में अपनी नई ऊंचाइयाँ दे रहा है।

स्वर्गीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज जी द्वारा यूनाइटेड नेशन में हिंदी में दिया गया भाषण और हाल में यू. एन. में प्रस्तावित हिंदी भाषा के लिये चार करोड़ रूपये का बजट हिंदी भाषा के उत्थान के लिये मील का पत्थर है।

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति का मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय का सूल"।

भारतेंदु हरिशचन्द्र

मीडिया, इंटनेट पर हिंदी भाषा :

आज की वैश्विक हिंदी अब नई प्रौद्योगिकी के रथ पर आरुण होकर माइक्रोसाफ्ट, गूगल, जैसी विश्वस्तरीय कंपनियों की सैर पर जा रही है।

इंटरनेट जैसे वैश्विक माध्यम के कारण हिंदी पत्रकारिता दूसरे देशों में भी विविध साइट्स पर उपलब्ध है।

हिंदी के वैश्विक कद को बढ़ाने में समाचार पत्र, जो कि विश्व में सबसे ज्यादा पढ़ें जाते हैं, की महत्वपूर्ण भूमिका है। हिंदी में अंग्रेजी के अनेक अखबार अपना संस्करण निकाल रहे हैं।

यह हिंदी की यशोकीर्ति का ही परिणाम है कि पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के संसद में हिंदी प्रयोग के साथ-साथ अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भी अपने चुनावी घोषणा पत्र की प्रतियां अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी करवाई थी।

यही कारण है कि बिल गेट्स ने हिंदी के वैश्विक महत्व को स्वीकार करते हुए हिंदी साफ्टवेयर तैयार करवाया था।

हिंदी की ग्लोबल युग में भूमिका एवं स्थान

भोगोलिक आधार पर हिंदी विश्वभाषा है क्योंकि इसके बोलने समझने वाले लोग संसार के सभी महाद्वीपों में फैले है।

जनतांत्रिक आधार पर हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि इसे बोलने समझने वालो की संख्या संसार में तीसरी है।

एशियाई संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका के कारण हिंदी एशियाई भाषाओं से अधिक एशिया की प्रतिनिधि भाषा है।

हिंदी स्वयं अपने भीतर एक अंतर्राष्ट्रीय जगत छिपाये हुए है, आर्य, द्रविण, आदिवासी, स्पेनी, पुर्तगाली, जर्मन, फ्रेंच, जापानी सारे संसार के भाषाओं के शब्द इसकी अंतर्राष्ट्रीय मैत्री एवं वसुधैव कुटुम्बकम् वाली प्रवृत्ति को उजागर करती है।

भारत के आकाशवाणी और दूरदर्शन हिंदी को विश्वस्तर पर स्थापित करने में निरंतर कार्यरत है।

उपसंहार :

हम हिंदुस्तानियों को मिलकर हिंदी के उत्थान के लिये प्रतिबद्ध रहना होगा, आज जरूरत इस बात की है कि हम विधि, विज्ञान, वाणिज्य तथा नवीनतम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी पाठ्य सामग्री लाने में तेजी लाएं।

आज समय की मांग है कि हम सब मिलकर हिंदी के वैश्विक (ग्लोबल) विकास की यात्रा में शामिल हों, ताकि विभिन्न निष्कर्षों एवं प्रतिमानों के लिये हिंदी को सही मायने में विश्व भाषा की गरिमा प्रदान हो सके। तभी हम अपनी मातृभूमि हिंदी के प्रति सच्ची निष्ठा के परिचायक रहेंगे।

मेरी छोटी सी जलपरी

श्री विनायक तोरस्कर
(पूर्व खंड -वेपन इलेक्ट्रोनिक)

मेरी छोटी सी जलपरी का नाम वेदश्री तोरस्कर है। 4 साल की उम्र में ही वह बहुत ज्यादा उत्साही और अपनी उम्र के हिसाब से काफ़ी शरारती हो गयी थी। उसकी शरारतों को एक अलग दिशा देने के लिए हमने उसकी रूचि खेलकूद में बढ़ाने की सोची। हमें लगा कि खेलकूद का फायदा उसके भविष्य में भी होना चाहिए, इसलिए हमने आसपास से जानकारी ली। हमें पता चला कि हमारे यहाँ तैराकी का तालाब है जहाँ प्रशिक्षण दिया जाता है। पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि वहाँ 5 साल के बच्चों को ही प्रशिक्षण मिलता है, लेकिन छोटे बच्चों को अपनी काबिलियत पर अभ्यास की अनुमति है।

मैंने सोचा पहले मेरी हमसफ़र (पत्नी) को प्रशिक्षित करके वेदश्री का अभ्यास करवाएँ। मेरी हमसफ़र का प्रशिक्षण ख़त्म होने के बाद हमने वेदश्री को तालाब में उतारना शुरू किया। शुरुआत में वह फ्लोटर के सहारे तैरने लगी, लेकिन अभ्यास करते-करते महज तीन महीने में फ्लोटर के बिना तैरना शुरू कर दिया। उसकी रूचि और बढ़ाने के लिए हम उसे पनवेल में ज़िला स्तरीय स्पर्धा दिखाने ले गए। वहाँ छोटे-छोटे बच्चों को भाग लेते देख वह बहुत खुश हुई और हमसे बोली, "अगली बार मैं भी स्पर्धा में भाग लूँगी।"

तैराकी में 4 मुख्य प्रकार होते हैं: 1) फ्री स्टाइल, 2) बैक स्ट्रोक, 3) ब्रेस स्ट्रोक और 4) बटरफ्लाई। उनमें से वेदश्री दो प्रकारों (फ्री स्टाइल और ब्रेस स्ट्रोक) में माहिर हो गयी। उरण में होने वाली ज़िला स्तरीय स्पर्धा की तैयारी शुरू करने तक वह 5 साल 3 महीने की हो गयी। अब वह पल आ गया जब उसने जीवन की पहली स्पर्धा (अंडर-6 श्रेणी) में भाग लिया और दो स्वर्ण पदक जीते। इसके बाद तो पदकों का सिलसिला ही चल पड़ा। कभी पेण तो कभी पनवेल में होने वाली स्पर्धाओं में उसे स्वर्ण , रजत और कांस्य पदक मिलते गए। ग्यारह साल की उम्र तक उसके पास 10 स्वर्ण , 06 रजत और 05 कांस्य पदक थे। यह सब उसके प्रशिक्षक हितेश भोईर की बदौलत संभव हुआ।

यूट्यूब के जरिये वेदश्री को मालूम पड़ा कि समुद्र में भी तैराकी की जा सकती है, तो उसने समुद्र में तैरने की जिद्द पकड़ ली। पहली बार जब हम उसे समुद्र में ले गए तो वह बहुत डर गयी, लेकिन हमने उसे हौसला दिया कि "डर के आगे जीत है"। उसने शुरुआत तो की, लेकिन अच्छे

मार्गदर्शक के बिना यह मुमकिन नहीं था। जैसे तालाब के लिए हितेश सर थे, वैसे ही समुद्र के लिए हमें संतोष पाटिल सर मिले, जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के 'सी स्विमिंग' मास्टर हैं। वेदश्री की काबिलियत देख उन्होंने प्रशिक्षण की ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार हो गए। अब उसका कड़ा प्रशिक्षण चालू हुआ। हर रविवार तीन-तीन घंटे समुद्र में और हर रोज तीन घंटे तालाब में अभ्यास होता था। वेदश्री ने यूट्यूब पर मोरा जेटी से गेटवे, एलीफेंटा से गेटवे और धरमतर खाड़ी से गेटवे की तैराकी के वीडियो देखे थे और उसे भी वैसा ही करना था। सर ने उसके आहार का विशेष ध्यान रखा। दो महीने के कठोर अभ्यास के बाद सर ने फैसला किया कि हम वेदश्री को 'अटल सेतु' के नीचे से 'गेटवे ऑफ इंडिया' तक 17 किलोमीटर की दूरी तैरा कर पार करवाएंगे, 3 मई 2025 तारीख तय हुई । ख़ुशी की बात यह थी कि 1 मई को उसका जन्मदिन था और 3 मई को उसके जीवन की सबसे बड़ी परीक्षा।

आखिरकार वह दिन आ गया। हम सब सुबह 2:30 बजे तैयार होकर घर छोड़कर मोरा जेटी (उरण) पहुंचे। वहाँ से नाव द्वारा हम अटल सेतु के नीचे लगभग 3:45 बजे पहुँच गए। हमने वेदश्री से आखिरी बार पूछा, "तू तैयार है ना?" वह दृढ़ता से बोली, "हाँ, मैं तैयार हूँ।" 15 मिनट में हमने उसके शरीर पर वैसलीन लगाया ताकि खारे पानी से त्वचा को नुकसान न हो। उसकी इस उपलब्धि का परीक्षण करने के लिए 'MSAAA' और 'Open Water Sea Swimming Association' की तरफ से एक परीक्षक भी हमारे साथ थे।

सुबह के 4 बजते ही वेदश्री ने भगवान, बड़ों, अपने प्रशिक्षक और समुद्र देवता का आशीर्वाद लेकर छलांग लगा दी। लहरों को चीर कर मेरी नन्ही जलपरी आगे बढ़ने लगी। उसका हौसला बढ़ाने के लिए उसकी मौसी, मामा, भाई और बहन भी आए हुए थे। ठंडे पानी में उसका मनोबल बनाए रखना हमारी ज़िम्मेदारी थी। पानी में करीब एक घंटा होने को आया और अभी भी 11 किलोमीटर की यात्रा बाकी थी। सर ने उसे पानी दिया और वह फिर तैरने लगी। उसके साथ-साथ छोटी-बड़ी मछलियाँ भी तैर रही थीं। सुबह के 5:15 बजे हम माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड के सामने से गुजरे। इस पल को यादगार बनाने के लिए यूट्यूबर—राज करंज, हितेन ठाकुर Vlogs और खारपालेकर Vlogs- भी

साथ थे और कैमरा में सब कैद कर रहे थे।

तैरते हुए दो घंटे बीत गए। उसके चेहरे पर थकावट दिख रही थी और अभी भी 6 किलोमीटर बाकी था। सर ने फिर उसे पानी दिया और हौसला बढ़ाया। अब तैरते हुए ढाई घंटे हो चुके थे। तभी सर ने उसे नाव के पास बुलाया और कहा, "अब इवेंट का सबसे कठिन समय आ गया है। यहाँ लहरों का प्रवाह सबसे तेज है। अगर तू रिदम से नहीं तैरेगी तो कुलाबा की तरफ बह जाएगी।"

लेकिन वह मेरी बेटी है, वह हार नहीं मान सकती थी। एक बार ठान लिया तो उसे करना ही था। उसने अपनी बची-खुची ताकत बटोरी और लहरों से भिड़ गयी। मैं देख रहा था, मेरी आँखे नम थीं। अंततः उसने कर दिखाया! वह गेटवे ऑफ इंडिया पहुँच गयी। उसकी माँ ने उसे प्यार किया, सबकी बधाईयां मिलीं और माँ ने उसकी आरती उतारी।

परीक्षक ने आधिकारिक समय की घोषणा की—3 घंटे 5 मिनट। यानी सुबह 7:05 बजे वह गेटवे पर थी। हम सब खुश थे कि हमारे परिवार की इस जलपरी ने लहरों को चीर कर नया इतिहास बनाया है। उसकी उपलब्धि के लिए उसे Maharashtra State Amateur Aquatic Asscoiation (MSAAA) और Open Water Sea Swimming Association की ओर से ट्रॉफी और प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। जी न्यूज़, आईबीएम लोकमत और सोशल मीडिया पर उसकी खूब चर्चा हुई। अलग-अलग जगहों पर उसका सत्कार हुआ। आज गूगल भी मेरी बेटी, 'जलपरी वेदश्री तोरस्कर' को पहचानता है।

योग- एक जीवन संजीवनी

श्री एल. एस. सिंह
मुख्य प्रबंधक (जनि-पाइप शॉप)

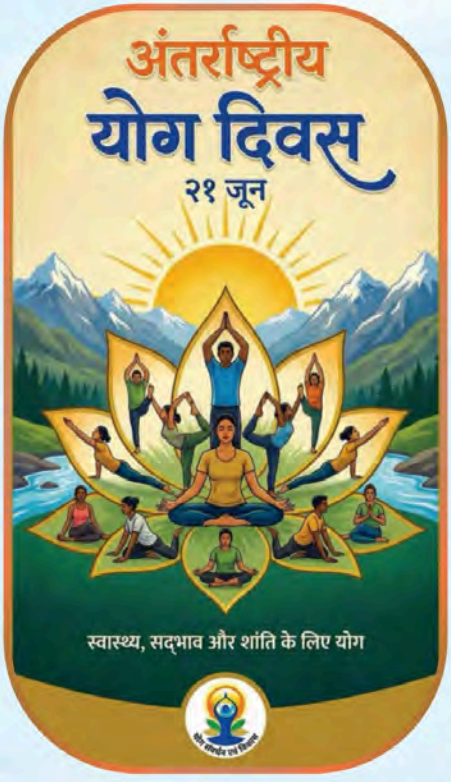

भारत की प्राचीनतम और गौरवशाली परंपराओं में से एक है – योग, जिसे "जीवन संजीवनी" कहना अत्यंत उपयुक्त है। "संजीवनी" वह औषधि थी जिसने लक्ष्मण को मृत्यु के मुख से वापस लाया था। "योग" शब्द संस्कृत की "युज्" धातु से बना है जिसका अर्थ है "जुड़ना"। यह जुड़ाव आत्मा का परमात्मा से, मन का शरीर से और व्यक्ति का प्रकृति से होता है। यह एक ऐसी साधना है जो व्यक्ति को आत्म-चिंतन, आत्म-नियंत्रण और आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाती है। योग का उल्लेख वेदों, उपनिषदों और विशेष रूप से महर्षि पतंजलि द्वारा रचित "योगसूत्र" में मिलता है, जिसे योग का मूल ग्रंथ माना जाता है।

पतंजलि योग सूत्र की भूमिका

महर्षि पतंजलि ने योग को एक सुव्यवस्थित शास्त्र रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार – "योगश्चित्तवृत्तिनिरोध" अर्थात् – योग मन की चंचल वृत्तियों को रोकने का नाम है। यह सूत्र योग का मूल आधार है। पतंजलि ने "अष्टांग योग" का उल्लेख किया, जो जीवन को संपूर्ण रूप से सुधारने का साधन है:

1. यम (नैतिक अनुशासन)

2. नियम (व्यक्तिगत अनुशासन)

3. आसन (शारीरिक स्थिति)

4. प्राणायाम (श्वास का नियंत्रण)

5.प्रत्याहार (इंद्रियों का नियंत्रण)

6. धारणा (एकाग्रता)

7. ध्यान (मेडिटेशन)

8. समाधि (आत्मिक चेतना में विलय)

यह अष्टांग योग किसी भी साधक को आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाता है।

भारतवर्ष की भूमिका

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण में विश्व समुदाय से एक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को अपनाने की अपील की थी जिसमें उन्होंने कहा था कि:

"योग भारत की प्राचीन परम्परा का एक अमूल्य उपहार है यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है; मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है; विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करने वाला है। यह केवल व्यायाम के

बारे में नहीं है, लेकिन अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज के विषय में है। हमारी बदलती जीवन-शैली में यह चेतना बनकर, हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है। तो आएं एक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को अपनाने की दिशा में काम करते हैं।"

श्री नरेन्द्र मोदी, संयुक्त राष्ट्र महासभा

11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के प्रस्ताव को मंजूरी मिल गई और सर्वप्रथम 21 जून 2015 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। तब से प्रतिवर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पूरे विश्व में मनाया जाता है।

21 जून उत्तरी गोलार्ध में सबसे लंबा दिन होता है, जिसे ग्रीष्म संक्रांति भी कहा जाता है। ग्रीष्म संक्रांति के बाद, सूर्य दक्षिणायन में प्रवेश करता है, जो भारतीय परंपरा में आध्यात्मिक सिद्धियां प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण समय माना जाता है। इसलिए, 21 जून का दिन योग और अध्यात्म के लिए खास माना जाता है, जिससे यह अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए एक उपयुक्त तिथि बन जाती है।

योग के लाभ:

- **शारीरिक:** रक्तचाप, मोटापा, पीठ दर्द हृदय रोग आदि में लाभकारी
- **मानसिक:** चिंता, तनाव, अवसाद में कमी व मानसिक स्थिरता
- **आध्यात्मिक:** आत्मा से जुड़ाव, आंतरिक शांति, संतुलित दृष्टिकोण

योग केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित नहीं है, यह

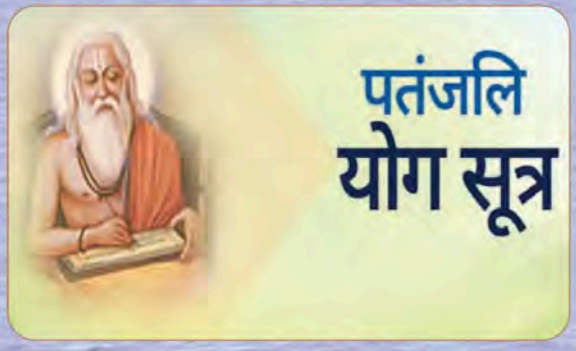

सामाजिक और वैश्विक शांति का भी माध्यम है। जब व्यक्ति शांत होता है, संतुलित होता है, तो उसका व्यवहार भी समरस होता है, जिससे समाज में सौहार्द और सहयोग की भावना बढ़ती है।

योग और वर्तमान जीवन: आधुनिक जीवन में व्यक्ति मानसिक तनाव, चिंता, उच्च रक्तचाप, मधुमेह आदि रोगों से ग्रसित है। योग आज की तनावपूर्ण जीवनशैली में एक अमृत के समान है जो तन, मन और आत्मा को स्वस्थ और संतुलित बनाए रखता है। योग नियमित रूप से करने पर न केवल इन बीमारियों को नियंत्रित करता है, बल्कि उन्हें जड़ से समाप्त करने की क्षमता भी रखता है। प्राणायाम, अनुलोम-विलोम, कपालभाति जैसे योगिक क्रियाएं श्वसन तंत्र को मजबूत करती हैं, रक्तसंचार बेहतर होता है और मस्तिष्क को शांति मिलती है।

आज के यांत्रिक युग में जब व्यक्ति मशीन बन चुका है, योग उसे फिर से मानवता, संतुलन और आंतरिक शांति की ओर ले जाता है। यह हमें सिखाता है कि वास्तविक सुख बाहरी भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि आंतरिक शांति और संतुलन में है।

निष्कर्ष

योग वास्तव में "जीवन संजीवनी" है। यह जीवन को लंबा, स्वस्थ, शांतिपूर्ण और सार्थक बनाने का एक प्रभावी साधन है। यदि हम योग को अपने जीवन में अपनाएं, तो न केवल हम व्यक्तिगत रूप से लाभान्वित होंगे, बल्कि एक स्वस्थ, सशक्त और शांतिपूर्ण समाज के निर्माण में भी योगदान दे सकेंगे।

महाकुंभ और हिंदुत्व- 2025

श्रीमती मौसमी मंडल
पत्नी: तपन मंडल

1. प्रस्तावना

"महाकुंभ हमें सिखाता है कि सच्ची शांति बाहरी नहीं है, बल्कि आत्मा के भीतर निहित है।" 'हिंदू' समुदाय ने 13 जनवरी 2025 से 26 फरवरी 2025 के बीच प्रयागराज में एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया कि उनकी संस्कृति और आस्था विश्व में सर्वश्रेष्ठ है और 'सनातन धर्म' ही सबसे प्राचीन है। उपरोक्त समय के दौरान भारत के प्रयागराज में 20 करोड़ हिंदुओं के 'महामिलन' का एक सच्चा उदाहरण देखने को मिला।

भारत और दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आए व्यक्तियों के लिए यहाँ एकत्रित होने का क्या लाभ था? माँ गंगा की गोद में, प्रयाग के त्रिवेणी संगम में एक 'डुबकी'। अमावस्या स्नान पर 'मोक्ष' पाने का विश्वास और एक 'हिंदू' के रूप में स्वयं को नवीनीकृत करना - "मैं एक हिंदू हूँ।" इस संतुष्टि को पाने के लिए व्यक्तियों ने त्रिवेणी तक पहुँचने के लिए बहुत संघर्ष किया। हम सभी जानते हैं कि भारत के विभिन्न हिस्सों से लोगों की आवाजाही की स्थिति कैसी थी। "मैं हिंदू हूँ... मुझे हिंदुत्व निभाना है" - यह भावना सभी सच्चे भारतीयों की नसों में दौड़ी और महामेला प्रयागराज भक्तों की विशाल भागीदारी के साथ सफल हुआ।

2. पौराणिक महत्व

यह पर्व हिंदू पौराणिक कथाओं पर आधारित है - समुद्र

मंथन, जब देवताओं और असुरों के बीच अमरता के अमृत के लिए युद्ध हुआ था। अमृत चार अलग-अलग स्थानों पर गिरा, जिससे वे स्थान पवित्र हो गए। 'महाकुंभ' मेला हिंदुओं के लिए अपने पापों को धोने, आध्यात्मिक ज्ञान और आत्मा की शुद्धि का समय है। कुंभ पर्व स्नान, विभिन्न आध्यात्मिक अनुष्ठानों और ध्यान के माध्यम से मनाया जाता है।

इन सबसे परे, यह भारतीय संस्कृति, इतिहास और भारतीय समाज का प्रतिनिधित्व करता है। कुंभ मेला चार स्थानों पर आयोजित होता है: 1) प्रयागराज, 2) हरिद्वार, 3) उज्जैन, और 4) नासिक। इस वर्ष 144 वर्षों के बाद त्रिवेणी संगम, प्रयागराज में 'महाकुंभ' आयोजित हुआ। विभिन्न साधु-संत (अखाड़े) आम लोगों के साथ मोक्ष के लिए 'शाही स्नान' करने एकत्र हुए और भारत के सनातन धर्म की याद दिलाई।

साधु-संतों की शोभायात्रा घोड़ों और हाथियों के माध्यम से पहुंची और पवित्र स्नान के लिए जुलूस निकाला। संतों, योगियों और भक्तों के इस जमावड़े ने वेदों और पुराणों के पवित्र वचनों को प्रस्तुत किया और हिंदू धर्म पर चर्चा की। 'सनातन धर्म संस्कृति' पर आधारित नाटक और धर्म पर नृत्य प्रस्तुत किए गए।

मेले में जनता और लाखों भक्तों के लिए मुफ्त भंडारा और सामाजिक कार्य उपलब्ध कराए गए। इस मेले ने भारत के सामाजिक और आर्थिक पहलुओं को भी प्रभावित किया, जिसने भारत और विश्व के पर्यटन पर जोर दिया। इसने विभिन्न जातियों और धर्मों के भक्तों की संस्कृति का आदान-प्रदान भी किया। इसने कुछ लोगों के जीवन की दिशा को योग, ध्यान, भक्ति की ओर बदला और इस धर्म सभा/मेले के माध्यम से वे संन्यासी बन गए।

3. इस महामेले की चुनौतियां और समाधान

विभिन्न सुरक्षा व्यवस्था, डिजिटल निगरानी प्रणाली, प्रशासनिक कर्मचारियों की तैनाती और सुरक्षाबलों ने समय-समय पर भक्तों के सुचारू प्रवाह को सुनिश्चित किया। सरकार की पहल और तैयारियों ने भीड़ प्रबंधन में बड़ी सफलता पाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। प्रयागराज में भारी जनशक्ति और उपकरणों की तैनाती के माध्यम से स्वच्छता और पर्यावरण सुरक्षा का भी ध्यान रखा गया। इस संबंध में, एक भक्त के रूप में मेरी भावना एक कविता के रूप में प्रस्तुत की जा सकती है जो इस महाकुंभ के छोटे-छोटे उदाहरणों को दर्शाती है।

4. कविता

मैं भी एक मुसाफिर हूँ।
144 साल की कुंभ स्नान से प्रेरित हूँ।
त्रिवेणी संगम से दूर मैं रहती हूँ
फिर भी अमावस स्नान की प्यासी हूँ।

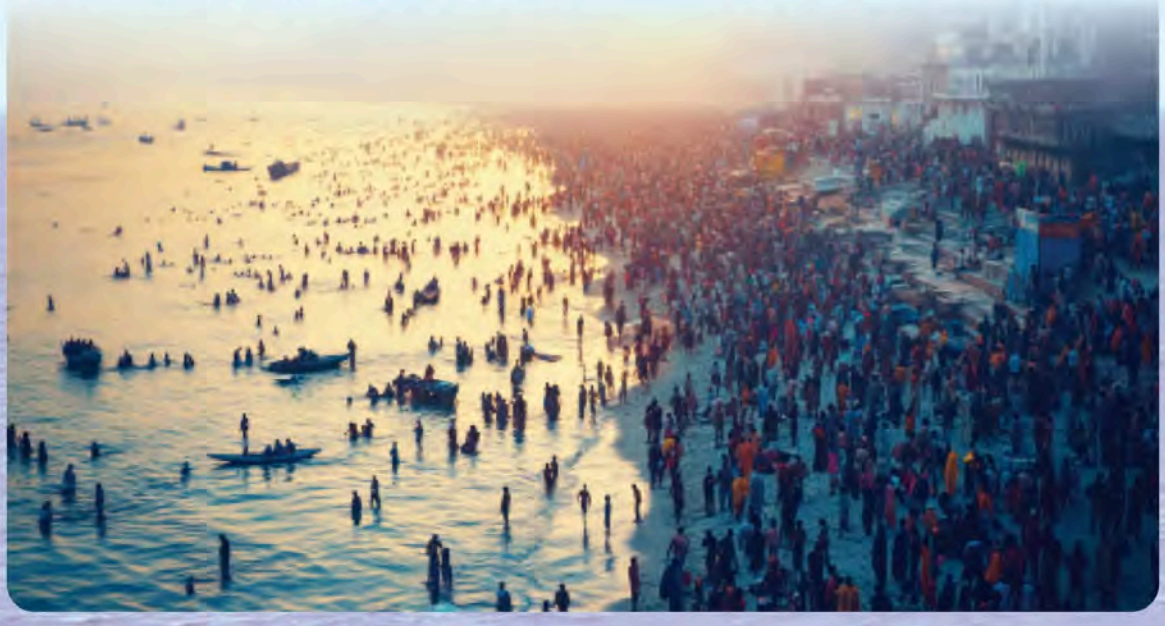

मित्र जनों को मनाया है, प्रयागराज में जाना है- 2
लड्डू जलेबी खाना है भीड़ के बीच में
सबके साथ गंगा जी में डुबकी लगाना है।
टिकट कराना मुंबई से बहुत बड़ा एक चैलेंज था,
क्योंकि संग ज़िद पर अड़े 80 साल का एक बुड्ढा था।
एजेंट बोला लगेगा पैसा टिकट का 4 गुना भाई,
फिर भी चढ़ पाओगे ट्रेन इसकी कोई गारंटी नाई।
कैसे न कैसे कुंभ में पहुँचें मन में बहुत थी आशा,
भीड़ के बीच में ढूंढ रहे थे कब मिलेगी मोनालिसा
मन की आशा से जप रहे थे, हम हनुमान चालीसा
कहीं दब न जाऊँ भीड़ में पढ़ रहे थे यह सबकी एक ही भाषा
हिन्दुस्तान की निवासी हूँ सनातन धर्म निभाती हूँ।
धक्कों में पहुँची संगम में मन में यह विचार लाती हूँ
सौ पूँजी खुद में समेटकर अमृत का मैं ही स्रोत हूँ
मैं कुंभ हूँ कलश भी हूँ, प्रयाग का मैं गर्व हूँ।
मैं ऋषियों की समृद्ध परंपरा का जीता जागता प्रमाण हूँ,
मैं धर्म हूँ, अधर्म भी, मैं विष भी हूँ, मैं पियूष भी हूँ।
मैं कुंभ हूँ कलश भी हूँ प्रयाग का मैं गर्व हूँ
माघ के पावन माह का सास्वत एक वरदान हूँ,
जहाँ संतों की वाणी गूँजी उस धरती का सम्मान हूँ
मैं कुंभ हूँ कलश भी हूँ प्रयाग का मैं गर्व हूँ
न मुसलमान न हिंदू हूँ -2, बस चिर एकता का चित्र हूँ।,
नासिक की मैं गोदावरी हूँ, हरिद्वार की अविरल धारा हूँ,
मैं उज्जैन का महाकाल हूँ, मैं कुंभ हूँ कलश भी हूँ,
प्रयाग का मैं गर्व हूँ।
जो भर गया तो पाप हूँ, छलक गया तो जाम हूँ,
मैं रीति रिवाज की जीती जागती मिशाल हूँ
मैं कुंभ हूँ कलश भी हूँ, प्रयाग का मैं गर्व हूँ।

5. निष्कर्ष

भारत के विभिन्न राज्यों से लोग ट्रेन, बस, लॉरी, कारों और यहां तक कि पैदल चलकर प्रयागराज की ओर बढ़े। परिवहन व्यवस्था भक्तों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकी, लेकिन भक्तों को 144वें महाकुंभ का हिस्सा बनना ही था,

यह सोचकर कि - "ये वक्त और नहीं मिलेगा, मेरी जिद्द है - जाना है"। इसलिए, लोग इस नेक काम के लिए पहुंचे जिसे शब्दों में फिर से पिरोया जा सकता है।

यह महाकुंभ केवल एक धार्मिक जमावड़ा नहीं है, बल्कि देश की आध्यात्मिकता, सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने और पर्यटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह भारतीय संस्कृति का एक ठहराव है। इसने एकता, विरासत, भक्ति और पौराणिक विश्वास पर जोर दिया। यह भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण व्यवस्था के रूप में उभरा और दुनिया के सबसे बड़े मेले के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व किया, जो संस्कृति, इतिहास, धर्म और निश्चित रूप से एकता के क्षेत्र में महान है।

इस कुंभ में मेरी भागीदारी व्यावहारिक रूप से संभव नहीं थी, लेकिन इसके प्रति मेरे विचार और भावनाएं मुझे 2027 में नासिक, महाराष्ट्र में होने वाले आगामी कुंभ में ले जाएंगी, ताकि मैं खुद को एक महान संस्कृति वाले एक हिंदू के रूप में साबित कर सकूँ।

जय हिंद!

मुंबई की 'कूल-कूल' सर्दी: सेहत का तड़का और देसी नुस्खे!

श्री गौतम राजपूत
वरिष्ठ अभियंता (तकनीकी सेवाएं)

नमस्कार मुंबईकरों! क्या आपने महसूस किया, सुबह की हवा में वो हल्की सी ठंडक?

मुंबई... एक ऐसा शहर जहाँ ठंड का मतलब स्वेटर नहीं, बल्कि सुबह की सैर पर बस एक हल्की जैकेट होती है! जहाँ न्यूनतम तापमान भी 19°C से 22°C के आसपास रहता है, लेकिन मौसम में ये हल्का बदलाव भी हमारी सेहत पर बड़ा असर डालता है। खासकर जब प्रदूषण का स्तर भी बढ़ जाता है। इस बदलते मौसम में स्वास्थ्य का ध्यान रखना क्यों ज़रूरी है और इसके लिए हमारी दादी-नानी के नुस्खे क्या हैं, आइए जानते हैं।

मुंबई की सर्दी: तापमान भले कम, पर सेहत को खतरा 'दम'! मुंबई की सर्दी भले ही उत्तर भारत जैसी कड़ाके की न हो, लेकिन यह मौसम अपने साथ कुछ खास चुनौतियाँ लेकर आता है :

बदलता तापमान: दिन में गर्मी और रात/सुबह में ठंड—तापमान का यह उतार-चढ़ाव शरीर को एडजस्ट करने का मौका नहीं देता, जिससे सर्दी, खांसी और वायरल इन्फेक्शन का खतरा बढ़ जाता है।

प्रदूषण का अटैक: सर्दियों में हवा की गति कम होने से धुंध और प्रदूषण (वायु गुणवत्ता सूचकांक AQI - मध्यम से खराब श्रेणी) शहर पर छा जाता है। यह फेफड़ों को सीधे प्रभावित करता है और सांस की बीमारियों (जैसे अस्थमा) को बढ़ा सकता है।

रूखी त्वचा और आँखें: ठंडी और शुष्क हवा त्वचा और आँखों की नमी चुरा लेती है, जिससे रूखापन, खुजली और आँखों में जलन की समस्या हो सकती है।

स्वास्थ्य के लिए ध्यान रखने योग्य ज़रूरी बातें:

चूँकि मुंबई की सर्दी कम समय के लिए होती है, इसलिए इन साधारण बातों का ध्यान रखना ही काफी है :

ध्यान रखने योग्य बात- क्यों ज़रूरी है?

☞ **मास्क का इस्तेमाल-** हवा में मौजूद प्रदूषण और

धूल के कणों को फेफड़ों में जाने से रोकता है। भीड़-भाड़ वाली जगहों पर वायरल इन्फेक्शन से भी बचाता है।

- **गर्म/गुनगुना पानी-** शरीर के तापमान को बनाए रखने और गले को सूखने से बचाने के लिए। यह इन्फेक्शन को दूर रखने में मदद करता है।
- **मॉर्निंग वॉक का समय-** अगर प्रदूषण ज़्यादा है, तो सुबह बहुत जल्दी बाहर निकलने से बचें। धूप निकलने के बाद (9 बजे के करीब) वॉक करें, जब हवा थोड़ी साफ हो जाती है।
- **हाइड्रेशन-** ठंडी हवा में प्यास कम लगती है, लेकिन शरीर को पानी की उतनी ही ज़रूरत होती है। पर्याप्त पानी त्वचा और आँखों की नमी बनाए रखता है।
- **लेयरिंग-** एक साथ मोटे कपड़े पहनने के बजाय, कई पतले कपड़े पहनें (जैसे टी-शर्ट पर शर्ट, उस पर हल्की जैकेट)। इससे आप दिन में गर्मी लगने पर आसानी से कपड़े उतार सकते हैं।
- **विटामिन-सी-** नींबू, संतरा, आंवला जैसे विटामिन-सी से भरपूर फल खाएं। यह इम्यूनिटी (रोग प्रतिरोधक क्षमता) को मज़बूत करता है।

दादी-नानी के 3 अचूक घरेलू नुस्खे

मुंबई की भाग-दौड़ में जब दवा की दुकान दूर हो, तो ये सदियों पुराने नुस्खे तुरंत राहत देते हैं :

1. हल्दी वाला दूध

* सामग्री: गर्म दूध, एक चुटकी हल्दी पाउडर (या कच्ची हल्दी), काली मिर्च और थोड़ा गुड़ या शहद।
* फायदा: हल्दी में करक्यूमिन होता है, जो एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-ऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर है। यह गले की खराश और सर्दी-जुकाम से तुरंत आराम दिलाता है।

2. अदरक और तुलसी का काढ़ा

* सामग्री: पानी, अदरक के छोटे टुकड़े, 5-6 तुलसी के पत्ते, 2-3 काली मिर्च, और शहद (मिठास के लिए)।
* फायदा: यह काढ़ा इम्यूनिटी बूस्टर है। यह बंद नाक को खोलता है और खांसी के बलगम को निकालने में मदद करता है।

3. गर्म पानी और नमक से गरारे

* सामग्री: गुनगुना पानी और एक चुटकी नमक।
* फायदा: यह सबसे आसान और असरदार तरीका है। गले के इन्फेक्शन और खराश को दूर करने के लिए दिन में 2-3 बार गरारे करें। यह बैक्टीरिया को खत्म करने में सहायक है।

अंत में, एक छोटी सी सलाह

मुंबई की सर्दी छोटी लेकिन यादगार होती है। इसे इन्फेक्शन और बीमारी में न गंवाएँ। अपने खान-पान पर ध्यान दें, पर्याप्त नींद लें और सुबह-शाम की सुहानी ठंडक का आनंद लें—पर मास्क लगाकर और गुनगुनी चाय की चुस्की के साथ!

आपकी सेहत ही सबसे बड़ी दौलत है!

हास्य व्यंग्य

श्रीमती मोना अग्रवाल
पत्नी- प्रवीण अग्रवाल

आजकल बच्चे गजब ढा रहे हैं,
पता नहीं परीक्षाओं में क्यों इतने अंक ला रहे हैं।
हम सब सात आठ भाई थे,
पढ़ाई में खूल दिल लगाया करते थे,
तब सबके मिलाकर 60-70% आया करते थे।

छोटा भाई तो कई-कई ट्यूशने पढ़ा,
पूरा ज़ोर लगा दिया पर अगली कक्षा में नहीं चढ़ा।
हौसलें इतने बुलंद कि कभी उदास नहीं हुए,
एक साल में दो भाइयों से ज्यादा कभी पास नहीं हुए।
बारहवीं में तो छोटे वाले के अकेले 43% आए थे,
घर वाले तो क्या रिश्तेदार तक फूले नहीं समाए थे।

रिज़ल्ट देखकर घर लौटा तो भाईसाहब,
अद्भुत नजारा था,
बड़ी बुआ आरती की थाल लिए दरवाजे पर ही खड़ी थी।
कहने लगी बच्चे ने तो इतिहास रच दिया।
कहने लगी बच्चे ने तो इतिहास रच दिया।।

इसी खुशी में सुबह की सवा मणी,
शाम का भंडारा रख दिया।
पिताजी ने तो पूरे घर में सफेदी करवा दी,
मार्कशीट शीशे में जड़वाकर ड्राइंगरूम में लगवा दी।
बधाई देने वालों के तो ताते की लग गए,
पिताजी धन्यवाद-धन्यवाद कहते-कहते ही थक गए।
बड़ी अम्माजी ने तो यहाँ तक कह दिया,
कि अब जब तक इसकी पढ़ाई चलेगी,
घर में घी की अखंड ज्योत जलेगी।
वो अलग बात है ज्योत बीच में ही बुझानी पड़ी,
पढ़ाई बीच में ही छुड़वानी पड़ी।

हमारे समय में बच्चे पढ़ाई से बिल्कुल नहीं घबराते थे,
एक ही कक्षा में कई-कई वर्ष लगाते थे।
कई बच्चों के तो रिश्ते भी स्कूल के ही द्वारा आते थे।
कई बार तो सिलेबस तक एक्सपायर हो जाता था,
बच्चे वहीं पड़ें रहते टीचर रिटाइर हो जाते थे।
जो बच्चे कक्षा में कई-कई वर्ष लगाते थे,
उन्हें कक्षा का मॉनीटर बना दिया जाता था।

वहीं बच्चे आज विजेता बन गए।
उस समय के विजेता आज देश के नेता बन गए।
आज पता नहीं बच्चे किस तनाव में रहते हैं,
हर वक्त एक अभाव में रहते हैं।
बस्ते के बोझ तले बच्चों का बचपन दब गया,
माँ-बाप का प्यार कम्प्यूटर मोबाइल को चढ़ गया।

समायोज्य टैप रिंच
(Adjustable Tap Wrench)

श्री हर्ष कुमार
प्रशिक्षु (एटीएस)

ट्रेड-फिटर (वर्ष- 1ST-2024-2026)

समूह के सदस्य

क्र.	नाम	टिकट सं.
1.	हर्ष कुमार	41431
2.	अमन कुमार	41433
3.	साहिल थाके	41421
4.	आशुतोष चौहान	41422
5.	शुभम शिंदे	41429

प्रस्तावना : टैप रिंच एक ऐसा उपकरण है जिसका उपयोग धातु या अन्य सामग्री में थ्रेड (Thread) काटने के लिए किया जाता है। पारंपरिक टैप रिंच केवल निश्चित आकार के टैप के लिए ही उपयोगी होते हैं। इस समस्या को दूर करने के लिए समायोज्य टैप रिंच (Adjustable Tap Wrench) तैयार किया गया है, जो विभिन्न आकारों के टैप के लिए समायोजित (Adjust) किया जा सकता है।

उद्देश्य : इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य एक ऐसा टैप रिंच तैयार करना है जो — विभिन्न आकार के टैप को पकड़ सके। उपयोग में आसान और हल्का हो। औद्योगिक कार्यों में समय और श्रम की बचत करे। पारंपरिक रिंच की तुलना में अधिक उपयोगी और टिकाऊ हो।

उपयोग की गई सामग्री :

1. माइल्ड स्टील (M.S) रॉड
2. नट-बोल्ट
3. एल्युमिनियम हैंडल (या स्टील हैंडल)
4. एडजस्टिंग स्क्रू
5. वेल्डिंग इलेक्ट्रोड
6. ड्रिल मशीन एवं कटिंग टूल्स

कार्य प्रणाली : इस रिंच में बीच में एडजस्टिंग स्क्रू लगाया गया है, जिससे हम टैप के आकार के अनुसार जबड़े (Jaws) को खोल या बंद कर सकते हैं। यह डिजाइन अलग-अलग साइज के टैप को आसानी से फिट करने की सुविधा देता है।

लाभ : एक ही रिंच से विभिन्न आकार के टैप को उपयोग किया जा सकता है। लागत कम और उपयोग अधिक, मरम्मत और रखरखाव में आसान समय और मेहनत दोनों की बचत करता है।

सीमाएँ : बहुत बड़े या भारी टैप के लिए यह उपयुक्त नहीं है। अत्यधिक बल लगाने पर स्क्रू ढीला हो सकता है।

निष्कर्ष : समायोज्य टैप रिंच (Adjustable Tap Wrench) एक उपयोगी और बहुउद्देशीय उपकरण है जो पारंपरिक टैप रिंच की कमियों को दूर करता है। यह कार्य को तेज़, सटीक और सरल बनाता है। ऐसे प्रोजेक्ट्स से विद्यार्थियों में तकनीकी समझ और रचनात्मकता दोनों का विकास होता है।

साहित्य दर्शन

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला

आधुनिक हिंदी काव्य के नवजागरण पुरुष

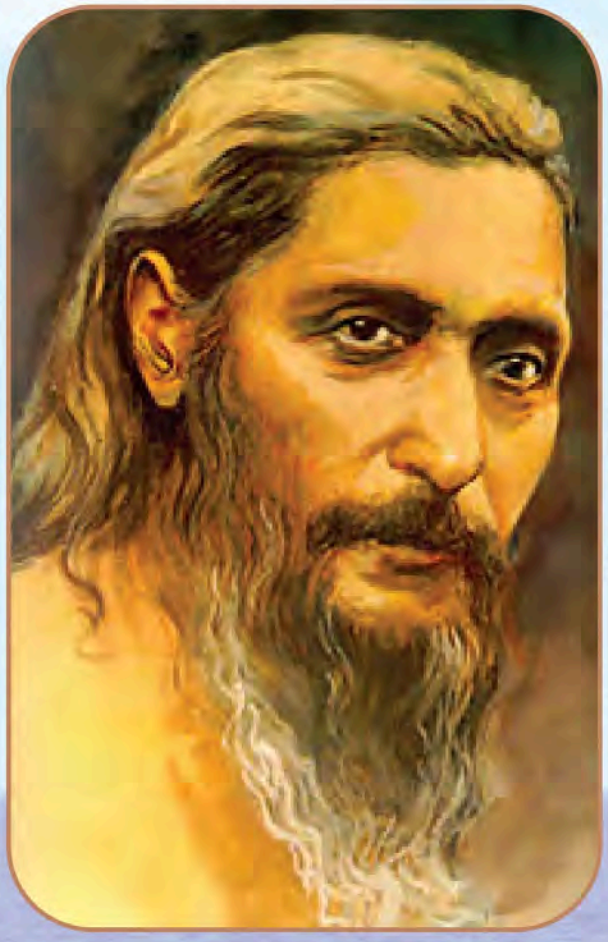

हिंदी साहित्य के आकाश में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' वह तेजस्वी नक्षत्र हैं जिन्होंने शब्दों में आत्मा, संवेदना और विद्रोह की ज्योति प्रज्वलित की। छायावाद के अग्रदूतों में स्थान पाने वाले निराला जी ने अपने लेखन से न केवल काव्य-जगत को नई दिशा दी, बल्कि समाज में परिवर्तन और नवजागरण की लहर भी उत्पन्न की। उनका साहित्य भावनाओं की गहराई, विचारों की ऊँचाई और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अद्‌भुत संगम है।

निराला जी का जन्म 21 फरवरी 1896 को बंगाल के महिषादल में हुआ। बचपन में ही माता का निधन और युवावस्था में पत्नी का असमय वियोग -इन घटनाओं ने उनके जीवन को करुणा और संवेदना से भर दिया। अभावों और संघर्षों के बीच उन्होंने साहित्य-सृजन को जीवन का साध्य बनाया। इलाहाबाद उनकी कर्मभूमि बनी, उनकी कहानियाँ जैसे "लिली", "चतुरी चमार" और "सुकुल की बीवी" समाज के यथार्थ और मानवीय संवेदना का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं।"सरोज स्मृति" उनकी पुत्री के निधन पर लिखा गया करुण गीत है, जिसमें पिता की वेदना और मानवीय संवेदना की गहराई झलकती है। निराला की कविता भाव और विचार का संतुलित संगम है। वे केवल भावुक कवि नहीं, बल्कि यथार्थवादी और मानवतावादी विचारक भी थे।

निराला जी का व्यक्तित्व विद्रोही, स्वाभिमानी और सृजनशील था। वे अन्याय, रूढ़ि और अंधविश्वासों के घोर विरोधी थे। उनका जीवन सिद्धांत यह था कि साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन का साधन है। वे स्वाधीनता आंदोलन से भी गहराई से जुड़े रहे। उनकी कृति 'अपरा' के लिये पुरस्कार, नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा स्मरण, स्मारक डाक-टिकट, तथा 'निराला स्मृति-सम्मान' जैसे स्थानीय और संस्थागत स्मरण आज भी उनकी साहित्यिक धरोहर को संजोए हुए हैं।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' केवल एक कवि नहीं, एक युगद्रष्टा थे, उनकी रचनाएँ आज भी हमें प्रेरित करती हैं कि सच्चा साहित्य वही है जो समाज के अंधकार में प्रकाश फैलाए। निराला जी का नाम हिंदी साहित्य में सदैव उस 'नवजागरण सूर्य' के रूप में अमर रहेगा, जिसकी किरणें आने वाली पीढ़ियों को मार्गदर्शन देती रहेंगी।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी प्रतिभा का अमिट हस्ताक्षर छोड़ा।

उनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं —

"परिमल", "अनामिका", "गीतिका", "संध्या गीत", "आराधना", और "सरोज स्मृति"।

उपन्यासों में "अप्सरा", "अलका", "निर्मला", "प्रभा" और "कुल्ली भाट" विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

निराला" वास्तव में वह कवि हैं,
जिन्होंने शब्दों से युग को जगा दिया।

वर दे वीणावादिनी वर दे।

प्रिय-स्वतंत्र-रव अमृत- मंत्र नव भारत में भर दे।

काट अंध- उर के बंधन- स्तर

बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,

कलुष- भेद- तं हर प्रकाश भर जगमग जग कर दे।

नव गति, नव लय, ताल- चंद नव

नवल कंठ, नव जलद- मन्द्ररव,

नव नभ के नव विहग- वृंद को नव पर, नव स्वर दे।

वर दे वीणावादिनी वर दे।

दिनांक 27.06.2025 को एमडीएल ने सीडीपीएलसी (श्रीलंका) के साथ एमओयू हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर उपस्थित अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कैप्टन जगमोहन, निदेशकगण एवं अन्य वरिष्ठगण।

दिनांक 22.04.2025 को आईएनएस वेला डी448 की दूसरी रीडिंग में उपस्थित श्री शैलेश जामगांवकर, निदेशक (पनडुब्बी एवं भारी अभियंत्रिकी) एवं एमडीएल और नौसेना के अधिकारीगण।

कॉर्पोरेट समाचार

दिनांक 01.07.2025 को भारतीय नौसेना को पी17 क्लास के दूसरे स्टील्थ फ्रिगेट उदयगिरी की सुपुर्दगी की गई, इस अवसर पर उपस्थित माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड एवं नौसेना के अधिकारीगण।

दिनांक 22.07.2025 को डी448 (मोरमुगाओ) की दूसरी रीडिंग में उपस्थित निदेशक (समवाय योजना एवं काार्मिक) कमांडर वासुदेव पुराणिक, भानौ(नि) एवं अन्य वरिष्ठगण।

दिनांक 02.04.2025 को एमपीवी- यार्ड 21001 के कील लेइंग समारोह में उपस्थित निदेशकगण एवं वरिष्ठ अधिकारीगण।

दिनांक 27.05.2025 को भारतीय तटरक्षक बल के लिए 14 तीव्र गश्ती पोतों के कील लेईंग समारोह के अवसर पर उपस्थित वरिष्ठ अधिकारीगण।

कॉर्पोरेट समाचार

दिनांक 22.07.2025 को नेक्स्ट जनरेशन ऑफशोर तीव्र गश्ती पोत हेतु आयोजित कील लेईंग समारोह के अवसर पर उपस्थित वरिष्ठ अधिकारीगण।

दिनांक 20.08.2025 को यार्ड एनजीओपीवी4 (यार्ड - 16404) प्लेट कटिंग समारोह के दौरान उपस्थित अधिकारीगण।

माझगांव डॉक के

दिनांक 15 अगस्त 2025 को आयोजित 79वे स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कैप्टन जगमोहन।

दिनांक 14.04.2025 को डॉ बाबा साहेब अंबेडकर जयंती के अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) कमांडर वासुदेव पुराणिक एवं उपस्थित वरिष्ठगण।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'हर घर तिरंगा अभियान' के अंतर्गत एटीएस छात्रों द्वारा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस मौके पर उपस्थित कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) श्री अरूण कुमार चान्द। साथ ही, इस उपलक्ष्य में नुक्कड़ नाटक, तिरंगा रैली और बाइक रैली का भी आयोजन किया गया।

कार्यक्रमों की झलकियाँ

दिनांक 20.06.2025 को वरिष्ठ प्रबंधन अधिकारी, एमडीओए सदस्य एवं बार्गनिंग काउंसिल सदस्य अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाते हुए।

दिनांक 20.06.2025 को एमडीएल आवासीय परिसर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाती महिला सदस्य।

सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाएं (WIPS) पश्चिमी क्षेत्र के लिए श्रीमती वंदना आतराम को उपाध्यक्ष एवं श्रीमती प्रियंका गायकवाड़ को कार्यकारी समिति की सदस्य चुना गया। इस अवसर पर उपस्थित निदेशक, जहाज निर्माण श्री बीजू जॉर्ज एवं अपर महाप्रबंधक सुश्री पल्लवी दलवी।

दिनांक 31.03.2025 से 02.04.2025 तक एम्पावर एक्टिविटी कैंप, कोलाड में टीम निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान उपस्थित अधिकारीगण और कर्मचारीगण।

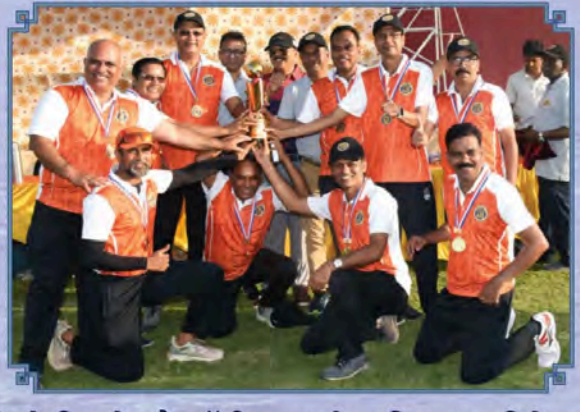

दिनांक 26.04.2025 एवं 27.04.2025 को महिला एवं पुरुष टीम के लिए 'चेयरमैन ट्रॉफी' का आयोजन किया गया। विजेता प्रतिभागियों को चेयरमैन ट्रॉफी से पुरस्कृत करते हुए डॉ. संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) एवं श्री अरुण कुमार चान्द,महाप्रबंधक (मानव संसाधन)।

एमडीसी द्वारा आयोजित

दिनांक 06.06.2025 को साइबर सुरक्षा संवेदीकरण आधारित सत्र में उपस्थित अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कैप्टन जगमोहन, निदेशकगण एवं अन्य वरिष्ठगण।

दिनांक 13.06.2025 को DoPT निदेशक श्री संदीप मुखर्जी द्वारा आरक्षण नीति पर आधारित सत्र में उपस्थित वरिष्ठ अधिकारीगण।

दिनांक 18.06.2025 को पद्मश्री चैतराम पवार द्वारा "युवा माँ धरती के संरक्षक है" विषय पर सत्र का आयोजन।

दिनांक 13 से 15 जुलाई 2025 को मसूरी, उत्तराखंड में कॉर्पोरेट प्रशासन पर आयोजित कार्यशाला में उपस्थित निदेशक (वित्त) श्री रुचिर अग्रवाल एवं अन्य वरिष्ठगण।

दिनांक 27.06.2025 को डॉ विकाश सिंह तोमर द्वारा निवारक सतर्कता पर सत्र का आयोजन।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 11.08.2025 को सुश्री स्मृति कुचल – इनर वेलनेस कोच, मोटीवेशनल स्पीकर, नेशनल एथेलीट द्वारा स्वास्थ्य और कल्याण पर सत्र।

दिनांक 24-26 जुलाई 2025 तक डॉ. रविन्द्र जैन द्वारा 'प्राथमिक उपचार एवं सीपीआर' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम।

दिनांक 17.09.2025 को डॉ. अनिल चौपड़ा, सीईओ बजाज कैपिटल ग्रुप द्वारा वित्तीय प्रबंधन पर सत्र।

दिनांक 29.09.2025 को ग्लेनईगल अस्पताल के विशेषज्ञ द्वारा स्वस्थ दिल की धड़कन और कार्डिएक आपातकाल की सावधानियां और प्रबंधन पर सत्र।

दिनांक 10.09.2025 को एसएसआरवीएम मनी के श्री गिरीश माहेश्वरी एवं श्रीमती शीतल माहेश्वरी द्वारा वित्त नियोजन आधारित सत्र का आयोजन।

हिंदी पखवाड़ा

2025 का आयोजन

हिंदी पखवाड़ा

हिंदी पखवाड़ा 2025

प्रति तिमाही आयोजित हिंदी कार्यशाला के कुछ दृश्य

दिनांक 04.08.2025 से 08.08.2025 तक भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के तत्वावधान में अनुवाद प्रशिक्षण केंद्र, नवी मुंबई की ओर से माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में 05 दिवसीय विशेष तकनीकी अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड को वर्ष 2024-25 के दौरान गृह पत्रिकाओं की श्रेणी में मुंबई (उपक्रम) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा 'द्वितीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया, इस अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक), महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं राजभाषा) एवं अन्य अधिकारीगण।

राजभाषा पत्रिका "जलतरंग" के 23वे अंक का विमोचन करते हुए निदेशकगण एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

आईएनएस वाग्शीर का जलावतरण